पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

सितम्बर - 2019

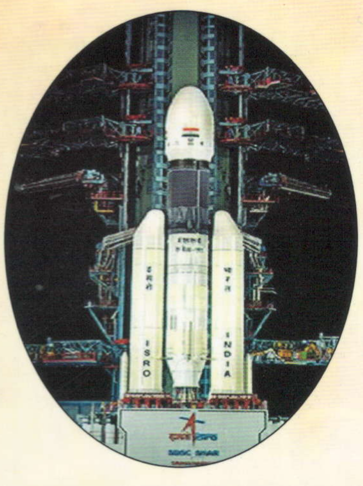

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

Punjab & Sind Bank

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

पी.एस.बी

(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)

(राजभाषा विभाग)

"पी. एण्ड एस.बी. राजभाषा अंकुर" का विमोचन

बैंक की गृह-पत्रिका पीएसबी राजभाषा अंकुर का विमोचन करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस.हरिशंकर जी एवं बैंक के निदेशक श्री बी.पी. विजेन्द्र जी।

पत्रिका के विमोचन पर उपस्थित बैंक के कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद जी तथा श्री गोविंद एन डोंग्रे जी।

पत्रिका के विमोचन के उपरांत पत्रिका के नवीनतम अंक को दर्शाते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, निदेशक, कार्यकारी निदेशक तथा राजभाषा विभाग के उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी।

पी.एस.बी

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा की हिंदी प्रत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस' प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

जुलाई-सितंबर, 2019

मुख्य संरक्षक

एस. हरिशंकर
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

डॉ. फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

श्री गोविन्द एन डोंग्रे
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री संजीव श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक

श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

डॉ नीरू पाठक
प्रबंधक
कौशलेन्द्र कुमार
राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं.: एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 15/11/2019)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : सुधीर प्रिन्टर्स

151, देशबंधु गुप्ता मार्केट,
करोल बाग, नई दिल्ली - 110005
फोनः 011-23522683, मो. 9810334493
ई-मेलः sudhirprinters1971@gmail.com

विषय-सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय सूची	1
2.	गृहमंत्री का संदेश	2-3
3.	वित्तमंत्री का संदेश	4
4.	संपादकीय	5
5.	संपूर्ण स्वास्थ्य-योग एवं राजयोग का समन्वय	6-7
6.	मेरी नेलांग यात्रा	8
7.	दिल्ली बैंक नराकास प्रतियोगिता	9
8.	हिंदी दिवस प्रतियोगिताएं	10-11
9.	अरब सागर में बसा मूंगे के द्वीपों का गुलदस्ता है लक्षद्वीप	12-14
10.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक की विदेशों में धूम	15
11.	सारागढ़ी दिवस-12 सितम्बर	16-17
12.	भारतीय संगीत परंपरा	18-19
13.	उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम एवं बैंकिंग सेवाएं	20
14.	हिंदी दिवस समारोह	21
15.	पुरस्कार वितरण	22-23
16.	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला	24
17.	फुल सर्किल	25-26
18.	कविता (शहीद-तीन जवान बेटे)	27
19.	गुरूदक्षिणा (बांग्ला कहानी हिंदी रूपांतर सहित)	28-29
20.	आंचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस आयोजन	30-31
21.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर बैंकों के विलय का प्रभाव/कल्पना	32-34
22.	ग्राहक के मुख से	35
23.	चलो दिलदार चलो, चाँद के पार चलो	36-39
24.	बैंक में लाभप्रदता के उपाय	40
25.	कार्टून कोना/जरा सोचिए	41
26.	काव्य मंजूषा	42-43
27.	आपकी कलम से....	44

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, सहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

निर्मला सीतारामन
वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री
भारत सरकार

Nirmala Sitharaman
Minister of Finance and Corporate Affairs
Government of India

14 सितंबर, 2019

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हिंदी भाषा को संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हिंदी भाषा विश्व में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। भारत में हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो एक ओर देश में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली, पढ़ी और समझी जाने वाली भाषा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों की सहायता से सरकारी नीतियों और योजनाओं के बारे में जनता को अवगत कराने और इस प्रकार सरकारी तंत्र में पारदर्शिता लाने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में भी एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है।

भाषा जितनी सहज और सरल होगी, विचारों का आदान-प्रदान उतना ही सरल होगा। सरकारी कामकाज में बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करें ताकि वह जनता की भाषा बनी रहे। आज हिंदी भाषा को पूरे विश्व भर में सम्मान की नजरों से देखा जाता है यहाँ तक कि टेक्नोलॉजी के जमाने में आज विश्व की सबसे बड़ी कंपनियां जैसे गूगल, फेसबुक, हिंदी सिनेमा, विज्ञापनों आदि भी हिंदी भाषा को बढ़ावा दे रही हैं। हिंदी दिवस के अवसर पर वित्त मंत्रालय के सभी विभागों, सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, बीमा कंपनियों, वित्तीय संस्थाओं एवं विनियामक निकायों के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह है कि वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें और न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रकाश फैलाने में अपना योगदान दें।

(निर्मला सीतारामन)

Office : 134, North Block, New Delhi-110001 Tel. : 23092810, 23092510 Fax : 23092828
Residence : 15, Safdarjung Road, New Delhi - 110011, Tel. : 23793791 Fax : 23793792

संपादकीय

साथियो,

राजभाषा अंकुर के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करना और अपने मन की बात आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे बेहद प्रसन्नता होती है। वस्तुतः हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की सबल, सशक्त तथा समर्थ संवाहिका है। इसीलिए 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघीय राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और तभी से यह दिन "हिंदी दिवस" के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी प्रधान कार्यालय में हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्टाफ सदस्यों ने बड़ी संख्या में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मैं, न केवल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों का, बल्कि उन सभी का जिन्होंने प्रतियोगिताओं में सहभागिता की, राजभाषा विभाग की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

पत्रिका के माध्यम से मेरा आप सभी से अनुरोध है कि भविष्य में भी कार्यालयीन औपचारिकताओं से ऊपर उठकर हिंदी के सरल रूप को स्वेच्छा से निष्ठापूर्वक अपने कामकाज की भाषा बनाएं और संस्था की उन्नति के लिए कार्य करें। । भारतेन्दु हरिश्चंद्र की यह पंक्तियां यही चरितार्थ करती हैं कि

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल।
पै निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

पत्रिका के प्रस्तुत अंक में राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेख, कहानी, कविता के साथ राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियां तथा प्रधान कार्यालय तथा विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस से संबंधित छायाचित्रों को समाहित किया है। ग्राहक के मुख से, जरा सोचिए, कार्टून कोना तथा भाषिक एकता सूत्र संयोजन की कड़ी में इस बार बांग्ला भाषा की कहानी (हिंदी रूपांतर सहित) पत्रिका का विशेष आकर्षण है।

पत्रिका के गौरव तथा निरंतरता को बनाए रखने के लिए आपकी सहभागिता तथा सुझाव ही इसकी सफलता का मूलभूत आधार है। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं जिससे कि पत्रिका को और सुरूचिपूर्ण बनाया जा सके।

संजीव श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

सम्पूर्ण स्वास्थ्य-योग एवं राजयोग का समन्वय

इस सृष्टि पर बौद्धिक स्तर पर सबसे अधिक विकसित मानव आज तनाव, भय, चिंता, अनिश्चितता के आगे इतना असहाय हो गया है कि इसी को नियति मान, इसका कोई समाधान न पाकर व्यसनों एवं दवाइयों के गहरे दलदल में फंसता जा रहा है। आज हम सभी जितना उस प्राचीन काल में से चली आ रही राजयोग आधारित जीवन शैली से दूर होते जा रहे हैं, उतना ही इन परेशानियों से ग्रसित होते जा रहे हैं। समय की इसी मांग को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वैश्विक स्तर पर योग को स्वीकारा है।

योग आध्यात्मिक अनुशासन एवं अत्यन्त सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित ज्ञान है। जो मान और शरीर के बीच सामन्जस्य स्थापित करता है। यह स्वस्थ जीवन जीने की कला एवं विज्ञान है। 11 दिसम्बर 2018 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में 193 सदस्यों ने रिकार्ड 166 सह समर्थक देशों के साथ 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का संकल्प सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। अपने संकल्प में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्वीकार किया कि योग स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए पूर्णतावादी दृष्टिकोण प्रदान करता है। योग विश्व की जनसंख्या के स्वास्थ्य के लिए तथा उनके लाभ के लिए विस्तृत रूप में कार्य करेगा। योग जीवन के सभी पहलुओं में सामन्जस्य बैठाता है और इसलिए बीमारी रोकथाम, स्वास्थ्य संवर्धन और जीवन शैली सम्बन्धी कई विकारों के प्रबंधन के लिए जाना जाता है।

योग शब्द सुनते ही अनेक शारीरिक क्रियायें मानस पटल पर आने लगती है, जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार अपने मन को सशक्त बनाने के लिए राजयोग भी अति आवश्यक है। 'राजयोग' मन द्वारा आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा है। जिससे हमारे मानसिक एवं आत्मिक बल की वृद्धि होती है। राजयोग अति सहज विधि है। जिसमें इस शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति 'आत्मा' को सर्वशक्तियों के स्त्रोत 'परमात्मा' से लगाकर उनसे सम्बन्ध जोड़ 'ईश्वरीय स्मृति' द्वारा परमात्मा की गुणों एवं शक्तियों का स्वयं में अनुभव करते हैं। जैसे एक शक्तिशाली चुम्बक के प्रभाव से लोहे में भी उसके चुम्बकीय गुण आ जाते है, ऐसे ही राजयोग में सर्वशक्तिमान परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़ने पर उनके गुण व शक्तियाँ हमारे अंदर समाती जाती है।

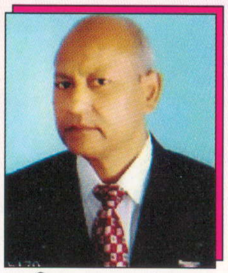

अनिल कुमार गुप्ता

राजयोग द्वारा सर्वांगीण स्वास्थ्य:-

1. मन का स्वास्थ्य:- मन का स्वास्थ्य अति अमूल्य है क्योंकि मन अर्थात आत्मा की एक शक्ति जो संकल्पों को उत्पन्न करता है। संकल्प जीवन रूपी नईया की पतवार है। जैसे संकल्प मन में उठते हैं, उसी अनुसार कर्मेन्द्रियाँ कर्म करती है और कर्म ही जीवन है। मन स्वस्थ है तो संकल्प तथा कर्म यर्थार्थ होंगे। मन को स्वस्थ रखने की खुराक है शान्ति। शान्ति, आत्मा का मूल गुण है। स्वयं को आत्मिक भाव में स्थित कर जब हम परमपिता परमात्मा शिव, जो शान्ति के सागर है, को याद करते हैं तब हम गहरी शान्ति व शीतलता की अनुभूति करते है। यह अनुभव हर प्रकार की मानसिक बीमारियों के लिए रामबाण अर्थात सर्वोत्तम औषधि है। नकारात्मक संकल्प ही मानसिक बीमारी का कारण बनते हैं। सहज राजयोग द्वारा हम परमात्मा से बुद्धि का संबंध जोड़ते है। जिसमें बुद्धि रूपी तार द्वारा परमात्मा की शक्तियाँ आत्मा की तरफ प्रवाहित होती है। राजयोग हमारे विचारों को इतनी सकारात्मक ऊर्जा देता है जिससे कठिन परिस्थितियों को भी श्रेष्ठ अवसर में परिवर्तित किया जा सकता है।

2. तनाव मुक्त जीवन- राजयोग से मानव को अपनी वास्तविक पहचान मिलती है। उसमें बहुत सी शक्तियाँ जैसे परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति, सहन शक्ति, सामना करने व सामने की शक्ति आ जाती है। इससे उसकी कार्यक्षमता तो बढ़ती ही है, साथ-साथ कोई भी अप्रिय बात या घटना उसे तनाव में नहीं लाती है। उसे इस बात का निश्चय रहता है कि इस सृष्टिनाटक में हम सब अभिनेता हैं। सबको अपनी-अपनी भूमिका मिली हुई है। इस समझ से औरों को दोषी बनाने का दृष्टिकोण बदल जाता है। परखने, निर्णय

आत्मविश्वास से पैदल चलना संदेह में दौड़ने से कहीं बेहतर है।

करने और एकाग्र करने की क्षमता से बुद्धि के स्वास्थ्य को नापा जाता है। बुद्धि की स्थिरता उपरोक्त तीनों शक्तियों का बीज है। सहज राजयोग के नियमित अभ्यास से व्यर्थ विचारों व स्वार्थ को त्यागना सहज हो जाता है। इससे व्यस्त रहते हुए भी बुद्धि को स्थिर रखने की क्षमता आ जाती है। स्थिरता से ही तीनों शक्तियों का विकास होता है।

3. शारीरिक स्वास्थ्य- चिकित्सा विज्ञान का मानना है कि तन की अधिकतर बीमारियों का सीधा सम्बन्ध हमारे मन में उठने वाले विचारों से है। नकारात्मक विचारों से ब्लड-प्रेशर, डायबिटीज, तनाव अवसाद, चिंता, अनिद्रा आदि बीमारियाँ तो तत्काल दिखाई पड़ती है तथा अन्य कुछ समय बाद परिलक्षित होती है। 'राजयोग' द्वारा हमारा जीवन स्वस्थ एवं दीर्घायु होता है। शरीर को स्वस्थ रखने में हमारे ही शरीर के अन्दर स्त्रावित होने वाले हार्मोन्स भी मुख्य भूमिका निभाते हैं। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार भी ये सभी हार्मोन्स उचित प्रमाण में तभी स्त्रावित होते है जब गहरी नींद में मन से डेल्टा तरंगे निकलती है। वैज्ञानिक उपकरणों से यह सिद्ध हुआ है कि 'सहज राजयोग' के अभ्यास के समय मन द्वारा गहरी शान्ति का अनुभूति किए जाने के कारण भी सबसे अधिक डेल्टा तरंगे निकलती है जो हार्मोन्स के स्त्राव को सन्तुलित रखती है।

कहा भी जाता है ''स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है।'' तन को स्वस्थ रखने में शुद्ध एवं संतुलित आहार का विशेष योगदान है। भोजन बनाने वाले की मानसिक तरंगे यदि दूषित है तो उसका प्रभाव आहार व उसे स्वीकार करने वाले दोनों पर पड़ता है। सहज राजयोग में परमात्मा शिव की याद में रहकर भोजन बनाना और उसी स्थिति के साथ उसे स्वीकार करने की अनोखी विधि है जिससे भोजन दोषरहित बन जाता है। इसके द्वारा यह भावना भी जागृत होती है कि यह शरीर मेरा मंदिर है, मैं पवित्र मूर्ति आत्मा हूँ। मंदिर को हर तरह से स्वच्छ रखा जाता है वैसे ही राजयोगी व्यक्ति अपवित्र खान-पान और अस्वच्छता से दूर रहता है। वेद शास्त्रियों ने भी कहा है ''आहार की शुद्धि से अन्त: करण की शुद्धि होती है।

अन्त:करण की शुद्धि से स्मृति स्थिर होती है और स्मृति की स्थिरता से जीव और माया के सम्बन्ध में हृदय में पड़े विभिन्न विचारों और संस्कारों की राग-द्वेषात्मक गाँठे खुल जाती है।

विश्व बधुत्व एवं विश्व शाँति- अशान्ति, भय, असुरक्षा आदि महसूस होने के कारण है अपनेपन का अभाव। जाति, मत, धर्म, भाषा, देश, ऊँच-नीच आदि अनेक प्रकार के भेदभाव से ग्रसित मानव भाई-चारे के महत्व को खो बैठा है। इसका मुख्य कारण है, एक सच्चाई न जानना कि हम सब किसके बच्चे हैं। सहज राजयोग हमें सच्चाई का दर्शन कराता है कि हम सब एक परमपिता की संतान है। इससे ही हमें स्पष्ट होता है कि 'सर्व शक्तिमान परमात्मा' इस सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज है। हम सभी अनेक देश, धर्म, जाति, रंग, रूप में इस सुन्दर वृक्ष के तने व डालियों की तरह भिन्नता में होते हुए भी उस बीजरूप परमात्मा की संतान आपस में भाई-भाई हैं। सारा विश्व एक परिवार है। ईश्वरीय नाते से भाई-भाई की स्मृति अनेक भिन्नताओं एवं अशांति में एकता एवं शांति लाती है।

सहज राजयोग क्या है ?

''मैं ज्योतिर्बिंदु आत्मा हूँ। न कि शरीर। मेरा निवास स्थान भृकुटी के मध्य है। (जहां माथे पर टीका लगाया जाता है)'' इस सत्य को जानना और आत्मिक अनुभव में रहकर परमपिता परमात्मा शिव- जो हम सभी आत्माओं के परमपिता हैं, को याद करना। इसका अभ्यास ही सहज राजयोग है।

यदि हम सभी 'योग' और 'राजयोग' में सामन्जस्य स्थापित कर उसे अपनी जीवनशैली का अंग बना लें तो वह दिन दूर नही जब यह भारतदेश पुन: भाईचारे के पवित्र सूत्र में बंध जायेगा और आने वाली पीढ़ियाँ एक सुखी और समृद्ध भारत का दीदार कर सकेगी।

ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद्दु:खभाग्भवेत्

। ऊँ शान्ति ।

आंचलिक निरीक्षणालय, लखनऊ

मेरी नेलांग यात्रा

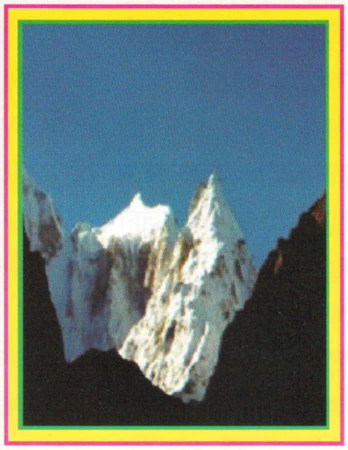

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में 1100 फीट से अधिक ऊंचाई पर नेलांग, तिब्बत के पठारी क्षेत्र का वह हिस्सा जो भारत के पास है। ऊंची व दुर्गम चोटियों से घिरा यह घाटी क्षेत्र समयातीत प्रतीत होता है। सुबह-सुबह यात्रा के दौरान पहाड़ों की लेटी हुई परछाइयाँ सूरज के ऊपर बढ़ने के साथ-साथ सिमट रही थीं मानो कि उनके उठने का समय हो रहा हो, पहाड़ों के जंगलों के बीच गुजरने वाली पवन सबको एक संगीत सुना रही थी मानो कि सुबह होने का संदेश सुना रही हो ऐसे शांत और मनोरम प्राकृतिक वातावरण देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। प्रकृति माँ के आशीर्वाद से भरपूर व विकराल शक्तियों का साक्षी नेलांग पथरीली व शुष्क वातावरण के साथ अपने ही अलग रंग में रंगा है मानो कि किसी ने दृश्य को रंग दिया हो। इसके नीले घोड़े और सफेद रंग कितने कड़क हैं कि आंखों को बांध कर रख देते हैं।

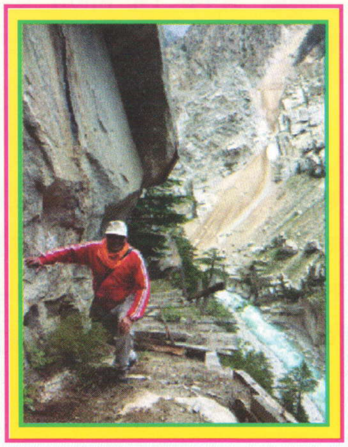

1962 के भारत-चीन युद्ध से पहले नेलांग, तिब्बत के साथ व्यापार का, एक पारंपरिक मार्ग था व उस समय के स्थानीय जनजातीय निवासी इस मार्ग को पैदल तय किया करते थे। इसे साल्ट रूट के नाम से भी जाना जाता था। यह मार्ग इतना अधिक लोकप्रिय था कि व्यापारियों व स्थानीय भोटिया लोगों ने मिलकर खड़ी चट्टान को काट कर उसके बीच लकड़ी का एक संकरा लटकता हुआ मार्ग बनाया जिस पर याक व खच्चर चल सकें। यह मार्ग आधुनिक इंजीनियरिंग के लिहाज से भी एक अजूबा है व इसको गरतां-गली के नाम से भी जाना जाता है। हालांकि यह अब चलने योग्य स्थिति में नहीं है किन्तु जिला अधिकारी व वन विभाग से अनुमति लेकर इसके मुंहाने तक जाया जा सकता है तथा यह घाटी के दूसरी तरफ के पहाड़ से भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अत: 26 से 28 सितंबर को उत्तरकाशी निवासी साहसिक व मेरे परिचित मित्र द्वारा गरतांग घाटी भ्रमण कर हम सबने पर्यटन दिवस मनाया।

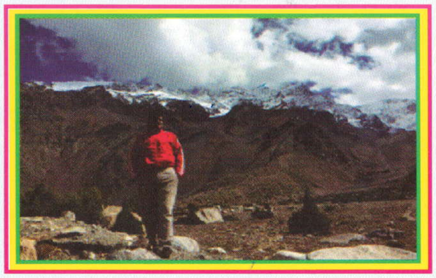

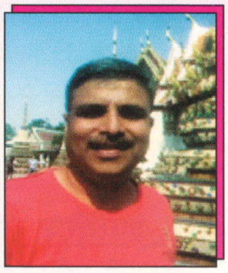

अमित मोहन अस्थाना

इसके लिए उत्तरकाशी प्रशासन व वन विभाग और भारतीय सीमा तिब्बत पुलिस से कुछ सीमित लोगों के लिए अनुमति प्राप्त कर ली गई और इस अवसर को मैं किसी की कीमत पर नहीं गंवा सकता था। अत: 26 सितंबर को मैं बस द्वारा उत्तरकाशी पहुंच गया। आगे की यात्रा जीप द्वारा की गई उसके बाद हम लोग भैरवघाटी पुल से पैदल दो किलोमीटर चल कर गए रास्ते में कई छावनी स्थित थीं उनको पार करते समय रास्ते में पागलताला पड़ा, वह अपने नाम को चरितार्थ कर रहा था। इस दौरान हम जीप से यात्रा कर रहे थे और हमारी जीप रास्ते में फंस गई थी। हम सबके संयुक्त प्रयास ने जीप को बाहर निकालकर सफर को आगे बढ़ाया। रात होने को थी हम लोग रात्रि विश्राम के लिए उचित स्थान की तलाश में थे। उचित स्थान मिलते ही हमने फाइबर का तम्बू लगाया और रात्रि 10.00 बजे खाना खाकर सो गए। सुबह सूर्योदय के साथ ही मेरी एक तमन्ना पूरी हुई जब मैंने पहाड़ पर नीले घुरड़ हिरन का एक झुंड घास चरते हुए देखा जोकि सभी के लिए आकर्षण का केंद्र था।

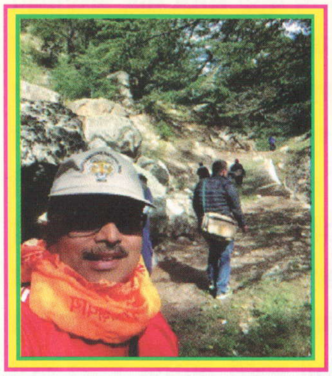

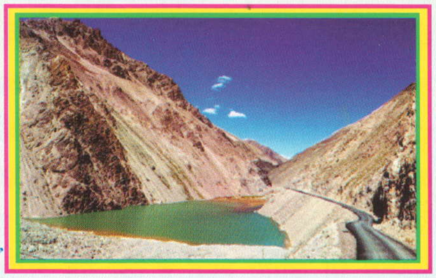

नेलांग कालजयी इतिहास का साक्षी व भौगोलिक-सामाजिक अजायबघर है जिसकी वन्य पृष्ठभूमि में नीले हिरण, बर्फीला तेंदुआ व अनगिनत पक्षी है। नितांत निर्जन भूमि व पहाड़ों पर हवाओं के द्वारा खींचे निशानों के साथ ठंडा पानी और बर्फ लिए यह जादुई भूमि मुग्ध कर देती है। वर्ष के 4 महीनों के आलावा यहाँ जीवन दुष्कर है।

वास्तव में मेरे लिए यह एक साहसिक यात्रा थी। उत्तराखंड की इस जगह में प्रकृति ही वास करती है नेलांग यात्रा मेरे जीवन की अद्भुत यात्रा रही है और सदैव अविस्मरणीय भी रहेगी।

प्रधान कार्यालय, सामान्य प्रशासन विभाग

दिल्ली बैंक नराकाश

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में बैंक के प्रधान कार्यालय में हिंदी व्यंग्य काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. कैलाश नारायण तिवारी, प्रोफेसर, दिल्ली यूनिवर्सिटी तथा श्री शाम सुंदर कथूरिया, संयुक्त निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम थे। प्रस्तुत हैं प्रतियोगिता की झलकियाँ ....

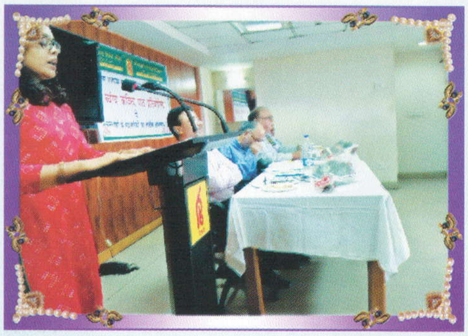
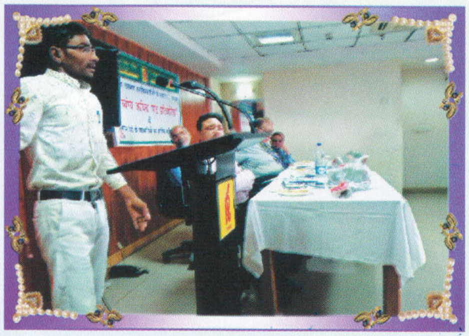

हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न

हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता

काव्य पाठ प्रतियोगिता

प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

गीत गायन प्रतियोगिता

अरब सागर में बसा मूंगे के द्वीपों का गुलदस्ता है लक्षद्वीप

एक यात्रा लक्षद्वीप की

कहते हैं किताबों से वह ज्ञान नहीं मिल पाता जो यात्राएं दे देती हैं। बैंक ने मुझे जीवन में इतनी यात्राएं कराई हैं, इतने शहर दिखाए हैं कि मेरे पास शब्द नहीं जिनसे मैं बैंक का शुक्रिया अदा कर सकूँ। कभी निरीक्षण, कभी संसदीय राजभाषा समितियाँ और कभी एलएफसी। एलएफसी की यात्राएं होती भी तनावरहित हैं। पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक, कहाँ कहाँ नहीं जाना हुआ। लेकिन इस बार की यात्रा पिछली सभी यात्राओं से अलग थी।

सुना जरूर था लक्षद्वीप के बारे में कि बहुत अनोखा है, लेकिन कोई भी साथी ऐसा नहीं मिला जो वहाँ स्वयं होकर आया हो। यात्रा के एक हफ्ता पहले ही लक्षद्वीप में औखी तूफान आकर हटा था और उस पर सुनामी की चेतावनी के चलते क्रूज सर्विस भी स्थगित कर दी गई थी, लेकिन कहते हैं ना, जब इरादे नेक और पक्के हों तो भगवान भी आपके साथ हो लेता है.. .. हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। हमने विमान द्वारा वहाँ पहुँचने का कार्यक्रम बनाया। लक्षद्वीप का मौसम सालभर खुशनुमा बना रहता है तापमान 30 डिग्री से ऊपर नहीं जाता, लेकिन अक्तूबर से अप्रैल के बीच यात्रा करना सबसे सुखद रहता है। इसलिए हमने दिसंबर के महीने में लक्षद्वीप जाने की सोची ताकि मौसम बहुत ही खुशनुमा मिले।

सोचना आसान था लेकिन अमल करने में थोड़ी सी परेशानी भी हुई। लक्षद्वीप में जाने के लिए लक्षद्वीप सरकार से परमिट लेना होता है जिसके लिए अपने शहर से पुलिस वैरीफिकेशन करवानी होती है। है ना अजीब सी बात, अपने देश के लिए ही पुलिस वैरिफिकेशन! और तो और जब तक रहने के लिए आपका कमरा लक्षद्वीप में बुक नहीं होगा तब तक आपको कोचीन से बोर्डिंग पास भी नहीं मिलेगा।

वैसे जानकारी के लिए बताता चलूँ कि कोचीन से लक्षद्वीप के पर्यटकों के लिए एक क्रूज भी जाता है जो कावारत्ती, मिनिकॉय और कलपेनी आइलैंड का 5 दिन और 4 रातों का टूर करवाता है। इसका प्रति पर्यटक किराया लगभग रुपए 30,000/- होता है जिसमें तीन समय का खाना और सुबह-शाम की चाय, फर्स्ट क्लास रुम, वैलकम ड्रिंक्स, परमिट व हैरिटेज फीस आदि शामिल है लेकिन वाटर स्पोर्टस आदि के व्यय इस खर्चे में शामिल नहीं होते। क्रूज के लिए अलग से परमिट लेने की जरूरत भी नहीं होती। ख़ैर हमारे पास तो परमिट था ही।

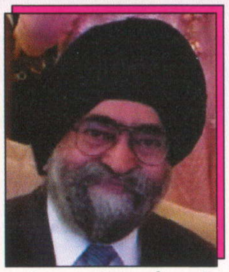

राजिंदर सिंह बेवली

दिल्ली से कोच्ची दोपहर को पहुँच गए और एक दिन कोच्ची का सुंदर शहर देखने के बाद अगले दिन सुबह लगभग सवा घंटे की उड़ान के बाद हम दोपहर सवा बारह बजे अगाती द्वीप पर पहुँच गए जो दुनियाँ का 5वाँ सबसे खतरनाक हवाई अड्डा है। बहुत ही छोटा रनवे और खतरनाक लैंडिंग। ऐसा लगा जैसे समुद्र में ही लैंडिंग हो रही हो। अगाती द्वीप को 36 द्वीपों वाले लक्षद्वीप के प्रवेश द्वार के नाम से भी जाना जाता है। लक्षद्वीप को अरब सागर में मूंगे के द्वीपों का गुलदस्ता भी कहा जाता है। अगाती में कदम रखते ही संसार का नजारा ही बदल गया हमारे लिए। सड़क के दोनों और 15-20 मीटर के अंतर पर अरब महासागर के बहुत ही छोटे से इस द्वीप में कदम रखते ही हमने अपनी बाँहें फैला दीं ताकि कुदरत के इस नजारे को हम अपने आगोश में भर सकें। यह जगह आज भी व्यावसायीकरण की दृष्टि से बिलकुल अछूती है। सफेद रेतीले समुद्र तट, अपरिवर्तित स्वच्छ पानी और फिरोजी नीले लैगून फिल्मों में जितने लुभावने लगते हैं, असल जिंदगी में भी यहाँ उतने ही लुभावने हैं। अगाती द्वीप में पानी के नीचे की कई गतिविधियों मौजूद हैं जैसे स्कूबा डाइविंग, गोता लगाना, श्वास नली लगा कर गोता लगाना, मजे की बात ये है कि ये सब खेल यहाँ बहुत सस्ते हैं जिस कारण यहाँ आने वाले इन खेलों का पूरा लुत्फ उठा सकते हैं। यहाँ आने वाले कुछेक पर्यटकों को केवल एक बात निराश करेगी वो ये, कि यहाँ आकर वे शराब नहीं पी सकते। इस पूरे द्वीप में शराब का प्रयोग

वर्जित है। द्वीप की लंबाई 6 किलोमीटर और अधिकतम चौड़ाई केवल 1000 मीटर है। 4 वर्ग किलोमीटर से कम, अगाती द्वीप सिर्फ 2 सैरगाहों वाला एक छोटा सा द्वीप है।

जाने का दिल तो नहीं था लेकिन दूसरी ओर मोटर बोट कावरत्ती ले जाने को हमारा इंतजार कर रही थी। ज्यादातर पर्यटकों को ये यकीन ही नहीं होता है कि दुनिया में कोई इतनी अच्छी जगह भी हो सकती है जहाँ आप है, कुदरत है और कोई भी नहीं... कोई भी नहीं।

ख़ैर हम मोटर बोट पर बैठे और निकल पड़े लक्षद्वीप की राजधानी कावारत्ती..... हमारे अगले पड़ाव के लिए।

वातानुकूलित स्पीड बोट का अपना ही आनंद था। अंदर जलपान की भी अच्छी व्यवस्था थी। सफर काफी आनंददायक था जो थकान के बावजूद पर्यटकों को आँखे मूंदने से रोके हुए था। समुद्र, समुद्र और केवल समुद्र..... लगभग 2 घंटे और 30 मिनट की यात्रा के बाद हम पहुँच गए लक्षद्वीप की राजधानी कावारत्ती में। मोटर बोट पहुँचने पर हमारा इंतजार कर रहा था, स्पोर्टस एंड टूरिज्म विभाग का लड़का 'निशांत' उसने हमें कैब में बिठाया और 10 मिनट के बाद ही हम पहुँच गए अपने टूरिस्ट रिजॉर्ट पर। जैसे ही हमें केन चेयर्स पर बिठाकर वैलकम ड्रिंक्स सर्व की गई.... सामने का नजारा कभी न भूलने वाला था। जी चाहा कि हम लंबे लंबे साँस ले लें और अगर बन पाए तो ढेर सारी ऑक्सीजन झोले में भरकर दिल्ली वापिस ले आएं। और बस भगवान ने जैसे हमारी सुन ली... और समय को रोक दिया, तीन दिनों के लिए, और जब तक हमारी वापसी की बोट का समय नहीं हुआ ठीक उसी जगह पर एक खूबसूरत सा स्वीट(2 कमरों का सैट) हमें दिलवा दिया।

निशात ने हमें बताया कि इस कावारत्ती में नारियल, नारियल की लकड़ी और नारियल के पत्तों के अलावा जो कुछ भी आप देख रहे हैं, सभी कुछ बाहर से लाया गया है। उसने हमें यह भी बताया कि लक्षद्वीप का नारियल दुनिया का बेहतरीन नारियल है जिसमें से लगभग 72% अच्छी क्वालिटी का तेल निकाला जाता है। इन दिनों तो तेल निकालने की मिलें भी लक्षद्वीप में लगा ली गई हैं। कुछ ही दूरी पर मछुआरे अपना काम कर रहे थे। निशात ने जानकारी दी कि अरब महासागर में दुनिया की बेहतरीन मछली टुन्ना का लगभग 1 लाख टन का तथा लगभग इतना ही शार्क मछली का कारोबार है। विश्व की बहुत ही बेहतर गुणवत्ता की टुन्ना यहाँ से निर्यात की जाती है।

हमने अपने कमरों में सामान रखा और आ गए कमरे के सामने के लैगून पर। लैगून (Lagoon) और बीच (Beach) में यह अंतर होता है कि बीच पर समुद्र की लहरें सीधे टकराती हैं लेकिन लैगून लगभग झील जैसा होता है। दूर समुद्र में सामने लहरें दिखाई देती हैं किंतु वे किनारे पर आने से पहले ही एक प्राकृतिक दीवार से टकराती हैं जो कि मछलियों के निवास और स्थिर समुद्री जीवों से बनी होती है.... जिन्हें कोरल्स कहते हैं। इस दीवार पर टकराने के बाद लहरें शांत हो जाती हैं और अंदर वाला समुद्र का हिस्सा एक प्राकृतिक झील जैसा बन जाता है लेकिन होता समुद्र ही है।

वहाँ कोरल सैंड थी, अथाह समुद्र (अरब महासागर) था और थे हम। बस फिर तनाव की दुनियाँ से दूर आराम से लैगून में आगे बढ़ते हुए निहारेने लगे रंग बिरंगी मछलियों को.... शीशे के बाहर खड़े होकर नहीं बल्कि खुद मछलियों जैसे ही बन कर। कितनी सुंदर होती है प्रकृति, कितनी सुंदर होती हैं मछलियाँ, कितना साफ था वहाँ का पानी... ये उसी दिन पता चला। फिर कोरल रेत पर लेटकर, रेत के मकड़ी जैसे केकड़ों को देखना उनकी फोटो खींचना, उन्हें हाथों पर बिठाना.... वाह। बनाना राइड, नौकायन, और फिर स्कूबा डाइविंग... क्या क्या नहीं था वहाँ। सच प्रकृति अपने पूरे यौवन में विराजमान थी वहाँ। स्कूबा ड्राइविंग का आनंद लेने के लिए हमें एक छोटी बोट पर बिठाया गया और दूर खड़ी बड़ी बोट पर उतारा गया जिसमें कई ऑक्सीजन सिलेंडर पड़े थे। ट्रेनिंग तो हमें पहले भी दे दी गई थी लेकिन बोट पर फिर से एक बार प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई और फिर हम सिलेंडर लगाकर उतर गए समुद्र के बीच और

यदि आप ऐसी जगहों पर जाना चाहते हैं जहाँ शांति हो, प्रकृति हो, पेड़ हों, सफाई हो, गंदी हवा बिलकुल भी न हो और ऐसी जगह जहाँ भीड़ भाड़ न हो, केवल आप हों, तो फिर जरूर जाइए.... लक्षद्वीप।

लक्षद्वीप

(संस्कृतः लक्षः लाख + द्वीप)

भारत के दक्षिण-पश्चिम में अरब सागर में स्थित एक भारतीय द्वीप-समूह है। समस्त केंद्र शासित प्रदेशों में लक्षद्वीप सब से छोटा केंद्र शासित प्रदेश है। लक्षद्वीप द्वीप-समूह की उत्तपत्ति प्राचीनकाल में हुए ज्वालामुखीय विस्फोट से निकले लावा से हुई है। यह भारत की मुख्यभूमि से लगभग 300 कि.मी. दूर पश्चिम दिशा में अरब सागर में स्थित है। लक्षद्वीप द्वीप-समूह में कुल 36 द्वीप हैं परंतु जनजीवन केवल 7 द्वीपों पर है। देशी पर्यटकों को 6 द्वीपों पर जाने की अनुमति है जबकि विदेशी पर्यटक केवल 2 द्वीपों (अगाती व बंगारम) पर ही जा सकते हैं।

रंगबिरंगी मछलियों और विभिन्न प्रकार के सुंदर से सुंदर समुद्री जीवों को नजदीक से निहारने का नजारा इससे सुंदर क्या हो सकता है हम सोच भी नहीं सकते। मछलियों को कुछ खिलाने का और उन्हें हाथ में लेने का सुंदर मौका। पानी के बीचो बीच मुंह से साँस लेने का यह हमारा पहला अनुभव था। फिर जब बाहर निकले तो ट्रेनर्स ने हमें आँवले खिलाए, समुद्र में डुबोकर, समुद्र के नमक का मजा लेते हुए। सच कुदरत कितनी सुंदर होती है।

पूरा दिन गुजारने के बाद शाम को लाइट हाउस देखने का कार्यक्रम बनाया। शाम 4 बजे के करीब कैब आई और हम चल चल पड़े लाइट हाउस देखने। सड़क के दोनों ओर हमारे बहुत ही करीब अरब महासागर, कैसे रहते हैं वे लोग, डर नहीं लगता उन्हें! हमने नोट किया कि वहाँ एक भी कुत्ता नहीं था। बताया कि वहाँ की शत् प्रतिशत आबादी मुसलिम है और वे कुत्ते नहीं पालते। उत्तर भारत में कुत्ते तो हमारे बहुत नजदीकी दोस्त होते हैं इसलिए उनके बिना वहाँ कुछ अजीब सा लगा। यह भी पता चला कि लक्षद्वीप में कोई पैट्राल पंप भी नहीं है। ड्रम में से एक कार को महीने में 20 लिटर और एक स्कूटर को 10 लिटर पैट्रोल मिलता है।

यह जानकर बहुत ही रुचिकर लगा कि शादी के बाद लड़का, लड़की के घर, घर जमाई बनकर रहता है। इसलिए सास-बहु की लड़ाई वहाँ बिलकुल नहीं होती, क्योंकि सास, बहु के साथ रहती ही नहीं है। वैसे वहाँ लड़कियां, लड़कों से अधिक पढ़ी लिखी होती हैं। अधिकाँश लड़के मछली या नारियल के व्यवसाय से जुड़े हैं।

कावारत्ती का लाइट हाउस आ चुका था। 37 मीटर ऊँचा और सबसे ऊँचे स्थान से पूरे कावारत्ती का विहंगम दृश्य सामने था। दिखने में लगभग एक पैर की शक्ल का। ऊपर से केवल और केवल नारियल का जंगल और उसके चारों ओर अरब सागर। लाइटहाउस की इतनी उँचाई से नीचे देखने में डर भी लगता था और रूह काँप सी उठती थी लेकिन नजारा इतना खूबसूरत कि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

उसके बाद हम चले हैलीपैड देखने जो बिलकुल ही नीचे के किनारे पर था। अद्भुत और अविस्मरणीय। वहाँ का सूर्यास्त देखने लायक था। एक लड़की (सबीना) से हमारी पारिवारिक दोस्ती हो गई और शाम को उनके घर हमें आमंत्रित किया गया। सबीना वहाँ के स्कूल में हिंदी पढ़ाती थीं। दिखिए हिंदी ने कहाँ जोड़ दिया। यहाँ आपको बताता चलूँ कि लक्षद्वीप की मुख्य भाषा मलयालम है और कम लोग ही हिंदी जानते हैं जिनमें से सबीना एक थी। शाम को कितना इंतजार था उन्हें हमारा, कितना प्यार था उनकी सादगी में। पॉलिथिन से बहुत दूर थे हम... नारियल के पत्ते में पैक किए हुए नारियल के बहुत ही स्वादिष्ट लड्डू बहुत ही प्यार से खिलाए भी गए और घर के लिए दिए भी गए। घर के निकले शुद्ध तेल की चार बोतलें भी हमें उपहारस्वरूप दी गईं।

पता ही नहीं चला कब तीन दिन निकल गए। एक-एक पल सँजोने लायक, एक-एक पल खूबसूरत। बस दिन आ गया वापिस बोट में बैठने का.... स्पीड बोट की वही रफ्तार थी और कावारत्ती तेजी से पीछे छूटता जा रहा था...। फिर पहुँच गए अगात्ती। कावारत्ती वाले कुछ पर्यटक हमें हवाई अड्डे पर मिले जो बंगारम द्वीप होकर आए थे। उन्होंने हमें बताया कि बंगारम का अलग ही मजा है और वहाँ की स्कूबा तो बिलकुल ही निराली थी.... ख़ासियत यह थी कि समुद्र में पैदल चलते-चलते अचानक से नीचे पानी में और फिर समुद्री जीवों के साथ बहुत ही आनंददायक् लगा उन्हें। थोड़ा अफसोस भी हुआ कि हम बंगारम नहीं देख सके। अगाती पहँचने के बाद पर्यटक बंगाराम द्वीप जरूर जाएं जो यहाँ का आकर्षण होने के अलावा एक बेमिसाल जगह है बंगारम ही लक्षद्वीप का वो एक मात्र द्वीप है जहाँ मदिरापान भी किया जा सकता है । इस टापू पर शार्क मछली और समुद्री कछुए भी देखे जा सकते हैं। यहाँ विंडसर्फिंग, स्कूबा डाइविंग, पेरासेलिंग, स्नोर्कलिंग, कयाकिंग का आनंद लिया जा सकता है।

द्वीप इतने हैं कि किसी न किसी को कहीं न कहीं तो अफसोस रहेगा ही। कितना भी घूम लीजिए फिर भी कुछ न कुछ तो छूटेगा ही। बहरहाल, जो देखा उन्हीं यादों में कुछ साल बसे रहना ही अपने आप में पूरा आनंद है। कभी मौका मिले तो आप भी जरूर जाइएगा...

पूर्व सहा. महाप्रबन्धक (राजभाषा)

नारियल के सिवा लक्षद्वीप में अपना कुछ भी नहीं है किंतु नारियल पानी पीने के लिए आपको मुश्किल पेश आएगी क्योंकि हर घर में तीन-चार पेड़ नारियल के होते हैं और पर्यटक वहाँ है ही नहीं, तो किसके लिए बेचेंगे वे नारियल। हाँ किसी को कहकर आप नारियल तुड़वा सकते हैं और जितना चाहें, मुफ्त में पी सकते हैं।

विविध समाचार

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की विदेशों में धूम

विदेशों में रह रहे सेवानिवृत पी.एस.बी परिवारों की गतिविधियां

पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सेवानिवृत कार्मिकों के 150 परिवार जो कि ग्रेटर टोरेंटो, कनाडा में रह रहे हैं। यह सभी परिवार पी.एस.बी सीनियर क्लब कनाडा के माननीय सदस्य हैं। यह क्लब ब्रहमटन शहर, ऑनटारियों, टोरेंटो से संबंध है। 30 जून 2019 को इस क्लब के तत्वाधान में हर्टलेक, कनाडा में बहु-सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा कनाडा दिवस का आयोजन किया गया जिसमें कनाडा स्थित पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सेवानिवृत कार्मिकों के 150 परिवारों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस आयोजन की गतिविधियों को चित्रों सहित पंजाबी समाचार पत्र सिख स्पोक्समैन में उपयुक्त स्थान देकर प्रकाशित किया गया।

इस आयोजन से यह तो स्पष्ट हो गया है कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सेवानिवृत कार्मिक देश-विदेश में कहीं भी रह रहें हों उनका आपसी भाई-चारा, सद्भावना तथा अपनी संस्था के प्रति प्रेम व उत्साह बरकरार है।

सारागढ़ी दिवस-12 सितम्बर

कुलदीप सिंह खुराना

सारागढ़ी दिवस एक सिख सैन्य स्मरण दिवस है हर साल 12 सितंबर को ब्रिटिश सिख सैन्यकर्मी और नागरिक, दुनिया भर में सारागढ़ी की लड़ाई व बहादुर वीरों की कुर्बानी को याद करते हैं। 12 सितम्बर 1897 को ब्रिटिश भारतीय सेना और अफगान ओराक्ज जातियों के मध्य तिराह अभियान से पहले लड़ा गया। यह उत्तर-पश्चिम फ्रण्टियर प्रान्त (वर्तमान खैबर-पखतुनख्वा, पाकिस्तान में) में हुआ। ब्रितानी सैन्यदल में 36 सिख बटालियन (सिख रेजिमेंट की चौथी बटालियन) के 21 सिख थे, जिन पर 12000 अफगानों ने हमला किया। सेना का नेतृत्व कर रहे हवलदार ईशर सिंह ने मृत्यु पर्यन्त युद्ध करने का निर्णय लिया। इसे सैन्य इतिहास में इतिहास के सबसे बड़े अन्त वाले युद्धों में से एक माना जाता है। युद्ध के दो दिन बाद अन्य ब्रिटिश सेना द्वारा उस स्थान पर पुनः अधिकार प्राप्त किया गया।

इस युद्ध को ईशर सिंह की अगुवाई में लड़ा गया था। ब्रिटिश राज के दौरान भारत में 36वीं सिख रेजिमेंट के सभी जवान सिख हुआ करते थे। इस बटालियन में केश धारी सिखों को रखा जाता था। ईशर सिंह ब्रिटिश सेना में एक हवलदार के रूप में कार्य करते थे। वहीं उनके अलावा इस युद्ध में उनका साथ लांस नायक चंदा सिंह, नायक लाल सिंह सहित कई जवानों ने दिया था।

ब्रिटिश सिख रेजिमेंट की सभी टुकड़ियां हर साल सारागढ़ी दिवस को रेजिमेंटल बैटल ऑनर्स डे के रूप में मनाती हैं। ब्रिटेन और दुनिया में आज भी भारतीयों खासकर सिखों द्वारा सारागढ़ी दिवस बड़े गर्व से मनाया जाता है। सारागढ़ी युद्ध में शहीद हुए सभी 21 सैनिकों को ब्रिटिश इंडिया द्वारा 'इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इससे यह भी साबित होता है कि उस समय दिए गए सिख सैनिकों के बलिदान की कदर अंग्रेजों ने भी की थी इतना ही नहीं दुनियां के इतिहास में यह पहली बार हुआ था जब किसी एक रेजिमेंट के प्रत्येक सदस्य को युद्ध में वीरता प्राप्त होने पर पुरस्कृत किया गया हो। ये पुरस्कार इस समय भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले परवीर चक्र के समतुल्य हैं।

अफरीदी और कजई कबायलियों ने उस समय गुलिस्तान और लोखार्ट के किलों पर कब्जा करने के मकसद से ये युद्ध किया था। ये दोनों किले भारत और अफगान की सीमा के पास स्थित थे और इन दोनों किलों का निर्माण महाराजा रणजीत सिंह द्वारा करवाया गया था। लॉकहार्ट के किले और गुलिस्तान के किले के पास ही सारागढ़ी चौकी हुआ करती थी, वही जवान द्वारा अफसरों से संचार करने के लिए ये एक प्रमुख केंद्र हुआ करता था। सारागढ़ी चौकी की जिम्मेदारी 36 वीं सिख रेजिमेंट के सिपाहियों को दी गई थी वहीं 21 सितंबर को पश्तूनों (अफरीदी और औरकजई) ने लोखार्ट किले पर हमला कर दिया था। इस हमले की खबर जवान गुरमुख सिंह द्वारा अपने अफसरों तक पहुंचाई गई थी, मगर इतनी जल्दी वहां पर सेना को भेज पाना असम्भव सा था। वहीं 36 वीं सिख रेजिमेंट के सिपाहियों ने इस युद्ध का मोर्चा संभाला और करीब 10 हजार पश्तूनों से युद्ध किया और करीब 600 लोगों को मार गिराया।

हालांकि इस हमले में 36 वीं सिख रेजिमेंट के सभी 21 जवान भी शहीद हो गए थे। वहीं पश्तूनों की ओर से कोई और नुकसान हो पाता, इससे पहले अंग्रेजी सेना ने वहां जाकर मोर्चा संभाल लिया और इस युद्ध को जीत लिया। वहीं जिस तरह से केवल 21 सिपाहियों ने इन पश्तूनों को बहादुरी से रोके रखा, उसकी बदौलत इनको हराने में अंग्रेजों को काफी सहायता मिली। इतना ही नहीं कहा जाता है कि इन 21 सिपाहियों के पास जब बंदूकों की गोलियां खत्म हो गई, तो उन्होंने 10,000 दुश्मनों का सामना चाकू की मदद से किया।

सारागढ़ी समाना रेंज पर स्थित कोहाट जिले का सीमावर्ती इलाके का एक छोटा सा गाँव है और इस समय वर्तमान पाकिस्तान में है। इस किले को 21 अप्रैल 1894 को ब्रिटिश सेना के 36वीं सिख रेजिमेंट के कर्नल जे कुक की कमान में बनाया गया था। अगस्त 1897 में लेफ्टिनेंट कर्नल जॉन हैटन की कमान में 36वीं सिख रेजिमेंट की पांच कंपनियों को ब्रिटिश-इंडिया (वर्तमान में खैबर पख्तूनवा) के उत्तरपश्चिमी सीमा पर भेजा गया था और समाना हिल्स, कुराग, संगर, सहटॉप धर और सारागढ़ी में उनकी तैनाती की गई।

अंग्रेज इस अस्थिर और अशांत क्षेत्र पर नियंत्रण पाने में आंशिक रूप से तो सफल रहे, लेकिन वहाँ के मूल निवासी पश्तूनों ने समय-समय पर ब्रिटिश सैनिकों पर हमला करना जारी रखा। इसलिए ब्रिटिश राज ने किलों की एक श्रृंखला को मरम्मत करके अपनी स्थिति मजबूत करनी चाही, ये वो किले थे जो मूल रूप से सिख साम्राज्य के शासक महाराजा रंजीत सिंह द्वारा बनाए गए थे। इनमें से दो किले फोर्ट लॉकहार्ट (हिंदू कुश पहाड़ों की

समाना रेंज पर) और फोर्ट गुलिस्तान (सुलेमान रेंज) ऐसे थे जो एक-दूसरे से कुछ मील की दूरी पर स्थित थे। इन किलों को एक-दूसरे से दिखाई नहीं देने के कारण सारागढ़ी को इन किलों के मध्य में बनाया गया था और इसका प्रयोग एक हेलिओग्राफिक संचार पोस्ट के रूप में किया जाने लगा। सारागढ़ी पोस्ट को एक चट्टानी पहाड़ी की चोटी पर बनाया गया, जिसमें एक छोटा सा ब्लॉक हाउस, किले की दीवार और एक सिग्नलिंग टॉवर का निर्माण किया गया।

1897 में अफगानों और आदिवासीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ और 27 अगस्त से 11 सितंबर के बीच पश्तूनों द्वारा किलों को कब्जा करने के कई जोरदार प्रयासों को ब्रिटिश सेना की 36वीं सिख रेजिमेंट द्वारा विफल कर दिया गया। 1897 में भारत मे अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह और आकस्मिक गतिविधियां बढ़ गई थीं और 3 तथा 9 सितंबर को अफरीदी आदिवासियों ने अफगानों के साथ मिल कर अंग्रेज सेना पर फोर्ट गुलिस्तान पर हमला किया। दोनों हमलों को नाकाम कर दिया गया था। पश्तूनों और अफगानों का नेतृत्व गुल बादशाह कर रहा था।

सारागढ़ी की लड़ाई के विवरण को काफी सटीक माना जाता है, क्योंकि ब्रिटिश जवान गुरमुख सिंह ने युद्ध के दौरान फोर्ट लॉकहार्ट को हेलियोग्राफ संकेतों के रूप में किले में होने वाली घटनाओं का संकेत दिया था। सारागढ़ी युद्ध का विवरण, गुरमुख सिंह हेलीकॉफ से फोर्ट लॉकहार्ट की संकेतों के अनुसार यथार्थता से ज्ञात माना जाता है।

सुबह 9.00 बजे के लगभग, लगभग 10,000 अफगान विद्रोहियों ने सारगढ़ी पोस्ट पर पहुँचने का संकेत दिया।

- गुरमुख सिंह के अनुसार लोकहार्ट किले में कर्नल हौथटन को सूचना मिली की उन पर हमला हुआ है।
- कर्नल हौथटन के अनुसार सारागढ़ी में तुरन्त सहायता नहीं भेज सकते थे।
- सैनिकों ने अन्तिम साँस तक लड़ने का निर्णय लिया।
- ब्रिटिश सेना के भगवान सिंह सबसे पहले घायल हुये और लाल सिंह गम्भीर रूप से घायल हुये।
- सैनिक लाल सिंह और जिवा सिंह कथित तौर पर भगवान सिंह के शरीर को पोस्ट के अन्दर लेकर आये।
- विद्रोहियों ने घेरे की दीवार के एक भाग को तोड़ दिया।
- अंग्रेज कर्नल हौथटन ने संकेत दिया कि उसके अनुमानों के अनुसार सारगढ़ी पर 10,000 से 14000 पश्तों ने हमला किया है।
- अफगान विद्रोही सेना के अधिनायक ब्रिटिश सैनिकों को आत्मसमर्पण करने के लिए लुभाता रहा।
- कथित तौर पर मुख्य द्वार को खोलने के लिए दो बार प्रयास किया गया लेकिन असफल रहे।
- उसके बाद दीवार टूट गयी।
- उसके बाद आमने-सामने की भयंकर लड़ाई हुई।
- असाधारण बहादुरी दिखाते हुये अंग्रेजी सेना के ईशर सिंह ने अपने सैनिकों को पीछे की तरफ हटने का आदेश दिया जिससे लड़ाई को जारी रखा जा सके। हालाँकि इसमें बाकी सभी सैनिक अन्दर की तरफ चले गये लेकिन एक पश्तों के साथ एक सैनिक मारा गया।
- गुरमुख सिंह, जो कर्नल हौथटन को युद्ध समाचारों से अवगत करवा रहे थे, अन्तिम सिख रक्षक थे। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने 20 अफगान विद्रोही शहीद हुए, पश्तों ने उसको मारने के लिए आग के गोलों से हमला किया। उन्होंने मरते दम तक लगातार 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' बोलते रहे।

सारागढ़ी को तबाह करने के पश्चात अफगान विद्रोहियों ने अंग्रेजों के गुलिस्तां किले पर निगाहें डाली, लेकिन इसमें उन्होंने काफी देरी कर दी और 13-14 सितम्बर की रात्रि में अंग्रेजों ने अतिरिक्त सेना वहाँ पहुँचाई और किले पर पुन: कब्जा कर लिया। इसके बाद पश्तों ने स्वीकार किया कि 21 सिखों के साथ युद्ध में उनके 180 सैनिक मारे गये और बहुत से सैनिक घायल हुये लेकिन बचाव दल के वहाँ पहुँचने पर तबाह जगह पर वहाँ 600 शव मिले।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

भारतीय संगीत परंपरा

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतवायदक्षरम् ।

विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतोयत:॥

अर्थात् शब्द रूपी ब्रह्म अनादि, विनाश रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रक्रिया से ही यह जगत भासित होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार अप्रत्यक्ष रूप से संगीतमय हैं। संगीत एक ईश्वरीय वाणी है। अत: यह ब्रह्म रूप ही हैं। संगीत आनन्द का अविर्भाव है तथा आनन्द ईश्वर का स्वरूप है। संगीत के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

संगीत एवं आध्यात्म भारतीय संस्कृति का सुदृढ़ आधार है। भारतीय संस्कृति आध्यात्म प्रधान मानी जाती रही है। संगीत से आध्यात्म तथा मोक्ष की प्रप्ति के साथ भारतीय संगीत के प्राण भूत तत्व रागों के द्वारा मन: शांति, योग ध्यान, मानसिक रोगों की चिकित्सा आदि विशेष लाभ प्राप्त होते है। प्राचीन समय से मानव संगीत की आध्यात्मिक एवं मोहक शक्ति से प्रभावित होता आया है। संगीत का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ भरत मुनि का नाट्यतशास्त्र है।

संगीत शब्द 'सम+ग्र' धातु से बना है। अन्य भाषाओं में 'सं' का 'सिं' हो गया है और 'गै' या 'गा' धातु (जिसका भी अर्थ गाना होता है) किसी न किसी रूप में इसी अर्थ में अन्य भाषाओं में भी वर्तमान है। ऐंग्लोसैक्सन में इसका रूपान्तर है 'सिंगन' जो आधुनिक अंग्रेजी में 'सिंग' हो गया है, आइसलैंड की भाषा में इसका रूप है 'सिग', (केवल वर्ण विन्यास में अन्तर आ गया है,) डैनिश भाषा में है 'सिंग , डच में है 'त्सिंगन' , जर्मन में है 'सिंगेन'। अरबी में 'गना' शब्द है जो 'गान' से पूर्णत: मिलता है। सर्वप्रथम 'संगीतरत्नाकर' ग्रन्थ में गायन, वादन और नृत्य के मेल को ही 'संगीत' कहा गया है। वस्तुत: 'गीत' शब्द में 'सम्' जोड़कर 'संगीत' शब्द बना, जिसका अर्थ है 'गान सहित'। नृत्य और वादन के साथ किया गया गान 'संगीत' है। शास्त्रों में संगीत को साधना भी माना गया है।

गायन मानव के लिए प्राय: उतना ही स्वाभाविक है जितना वाक। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है जितना कि कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। प्रामाणिक तौर पर देखें तो सबसे प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष, मूर्तियों, मुद्राओं व भित्तिचित्रों से जाहिर होता है कि हजारों वर्ष पूर्व लोग संगीत से परिचित थे। देव-देवी को संगीत का आदि प्रेरक सिर्फ हमारे ही देश में नहीं माना जाता, यूरोप में भी यह विश्वास रहा है। यूरोप, अरब और फारस में जो संगीत के लिए शब्द हैं उस पर ध्यान देने से इसका रहस्य प्रकट होता है। संगीत के लिए यूनानी भाषा में शब्द 'मौसिकी' लैटिन में 'मुसिका', फ्रांसीसी में 'मुसीक', पोर्तुगी में 'मुसिका', जर्मन में मूसिक', अंग्रेजी में 'म्यूजिक', इब्रानी, अरबी और फारसी में 'मोसीकी'। इन सब शब्दों में साम्य है। ये सभी शब्द यूनानी भाषा के 'म्यूज'शब्द से बने हैं। 'म्यूज' यूनानी परम्परा में काव्य और संगीत की देवी मानी गयी है। कोश में 'म्यूज' शब्द का अर्थ दिया है 'दि इन्सपायरिंग गॉडेस ऑफ साँग' अर्थात् 'गान की प्रेरिका देवी'। यूनान की परम्परा में 'म्यूज' 'ज्यौस'की कन्या मानी गयी हैं। ज्यौस' शब्द संस्कृत के 'प्रौस' का ही रूपान्तर है जिसका अर्थ है 'स्वर्ग'। 'ज्यौस' और 'म्यूज' की धारण ब्रह्मा और सरस्वती से बिलकुल मिलती-जुलती है। सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, वही संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत नाम इन तीनों के एक साथ व्यवहार से पड़ा है। गाना, बजाना और नाचना प्राय: इतने पुराने है जितना पुराना आदमी है। बजाने और बाजे की कला आदमी ने कुछ बाद में खोजी-सीखी हो, पर गाने और नाचने का आरंभ तो न केवल हजारों बल्कि लाखों वर्ष पहले उसने कर लिया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

अनूप सिंह चावला

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु एक प्रकार से संगीत का निर्माण करती है। यह विभिन्न प्रकार की ध्वनियां ही तो हैं जिनके मेल से जिस रस की प्राप्ति होती है वही संगीत है। पक्षियों के चहकने में, नदी के बहाव में, झरने की आवाज में, पत्तों की सरसराहट में, संगीत है।

भारतीय संगीत के मुख्य दो प्रकार हैं- शास्त्रीय संगीत और भाव संगीत। शास्त्रीय संगीत उसे कहते हैं, जिसमें नियमित शास्त्र होता है और जिसमें कुछ विशिष्ट (ख़ास) नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ, शास्त्रीय संगीत में राग के नियमों का पालन करना पड़ता है, न करने से राग हानि होती है। इसके अतिरिक्त लय-ताल की सीमा में रहना पड़ता है, गीत का कौन सा प्रकार हम गा रहे हैं, उसका निर्वाह भी उसी प्रकार से होना चाहिए, इत्यादि-इत्यादि। भाव संगीत में शास्त्रीय संगीत के समान न कोई बन्धन होता है और न उसका नियमित शास्त्र ही होता है। भाव संगीत का मुख्य और एकमात्र उद्देश्य कानों को अच्छा लगना है, अत: उसमें कोई बन्धन नहीं रहता-चाहे कोई भी स्वर प्रयोग किया जाए, चाहे जिस ताल में गाया जाए व आलाप, तान, सरगम, आदि कुछ भी प्रयोग किया जाए अथवा न प्रयोग किया जाए। भाव संगीत का मुख्य उद्देश्य रंजकता है। रंजकता के लिए ही कहीं-कहीं शास्त्रीय संगीत का सहारा भी लिया जाता है। भाव संगीत को सुगम संगीत कहते हैं।संगीत

के माध्यम से परमात्मा से आत्म मिलन किया जा सकता है। जब हम परमात्मा का नाम संगीतमय रूप में लेते हैं तो एक अलग प्रकार का सुकून प्राप्त होता है। संगीत हमें तनाव मुक्त करने में सफल होता है।

संगीत किसी भी देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम करता है , जहां न कोई जाति बंधन है न कोई सीमाओं का बंधन, संगीत मिलन का प्रतीक है, धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक है। ऐसे ही एक शख्स भारतीय शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद बिस्लिलाह खां शहनाई वादक जिनकी शहनाई की गूंज केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों तक गूंजती है। उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान ऐसे मुसलमान थे जो सरस्वती की पूजा करते थे। वे ऐसे पांच वक्त के नमाजी थे जो संगीत को ईश्वर की साधना मानते थे और जिनकी शहनाई की गूंज के साथ बाबा विश्वनाथ मंदिर के कपाट खुलते थे। वे ऐसे बनारसी थे जो गंगा, संकटमोचन और बालाजी मंदिर के बिना अपनी जिंदगी की कल्पना नहीं कर सकते थे। वे ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संगीत साधक थे जो बनारसी कजरी, चौती, ठुमरी और अपनी भाषाई ठसक को नहीं छोड़ सकते थे।वे ऐसे बनारसी थे जो गंगा में वजू करके नमाज पढ़ते थे और सरस्वती का स्मरण करके शहनाई की तान छेड़ते थे। वे इस्लाम के ऐसे पैरोकार थे जो अपने मजहब में संगीत के हराम होने के सवाल पर हंस कर कह देते थे, 'क्या हुआ इस्लाम में संगीत की मनाही है, कुरान की शुरुआत तो 'बिस्मिल्लाह' से ही होती है।

लोकगीत तो प्रकृति के उद्गार हैं। साहित्य की छंदबद्धता एवं अलंकारों से मुक्त रहकर ये मानवीय संवेदनाओं के संवाहक के रूप में माधुर्य प्रवाहित कर हमें तन्मयता के लोक में पहुंचा देते हैं। लोकगीतों के विषय, सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हुए हैं। इन गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य, सुख-दुःख और विभिन्न संस्कारों और जन्म-मृत्यु को बड़े ही ह्रदयस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

संगीतमयी प्रकृति जब गुनगुना उठती है लोकगीतों का स्फुरण हो उठना स्वाभाविक ही है। विभिन्न ऋतुओं के सहजतम प्रभाव से अनुप्राणित ये लोकगीत प्रकृति रस में लीन हो उठते हैं। बारह मासा, छैमासा तथा चौमासा गीत इस सत्यता को रेखांकित करने वाले सिद्ध होते हैं। पावसी संवेदनाओं ने तो इन गीतों में जादुई प्रभाव भर दिया है। पावस ऋतु में गाए जाने वाले कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा आदि इसके प्रमाण हैं।

सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतों/लोकसंस्कृतियों का सहेजा जाना बहुत जरूरी है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां पागलों की संख्या अधिक होती है। सदियों से दबे-कुचले समाज ने, खास कर महिलाओं ने सामाजिक दंश/अपमान/घर-परिवार के तानों/जीवन संघषों से जुड़ी आपा-धापी को अभिव्यक्ति देने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया। लोकगीत किसी काल विशेष या कवि विशेष की रचनाएं नहीं हैं। अधिकांश लोकगीतों के रचियताओं के नाम अज्ञात हैं। दरअसल एक ही गीत तमाम कंठों से गुजर कर पूर्ण हुई है। महिलाओं ने लोकगीतों को जिन्दा रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज वैश्वीकरण की आंधी में हमने अपनी कलाओं को तहस-नहस कर दिया है। अपनी संस्कृतियां अनुपयोगी/बेकार की जान पड़ने लगी हैं। ऐसे समय में जोगिया, फाजिलनगर, कुशीनगर जनपद की संस्था-लोकरंग सांस्कृतिक समिति ने लोकगीतों को सहेजने का काम शुरू किया है। संस्था ने तमाम लोकगीतों को बटोरा है और अपने प्रकाशनों में छापा भी है। संस्था महत्वपूर्ण लोक कलाकारों के अन्वेषण में भी लगी हुई है और उसने रसूल जैसे महत्वपूर्ण लोक कलाकार की खोज की है जो भिखारी ठाकुर के समकालीन एवं उन जैसे जरूरी कलाकार थे।

हम लोग जिन गीतों से अपने मन को जोड़कर देख पाते है, वह है फिल्मी गीत! भारतीय सिनेमा और गीत, संगीत का साथ आत्मा और शरीर का है। अगर कहा जाये तो दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। आज सिनेमा की अप्रत्याशित सफलता और ऊँचाई में गीत, संगीत का ही विशेष योगदान है। सिनेमा जो आज नये सफलता का इतिहास रच रहा है इसका एक बड़ा कारण गीत, संगीत है। भारतीय सिनेमा में संगीत का पुराने समय से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हम यह जानते हैं की 1913 से भारत में फिल्मो का निर्माण शुरू हुआ लेकिन इसे लोकप्रियता और पहचान आजादी के बाद मिली। हमारे फिल्म जगत में नौशाद, एस. डी. बर्मन, मौहम्मद जहूर खय्याम, हसरत जयपुरी, मजरूह सुल्तानपुरी जैसे गीतकार और संगीतकार थे जिनके लिखे गीत और स्वरबद्ध किये संगीत को बॉक्स ऑफिस पर सफलता की गारंटी माना जाता था कई बेहतरीन फिल्में हैं जिनके गीत आज भी सदाबाहर हैं और सुने जाते हैं सन 2000 के आगमन के बाद भारतीय गीत, संगीत परिप्रेक्ष्य को देखा जाये तो थोड़ा बदलाव हुआ है, अब शोर और तेजी से बजने वाले गाने भी चलते हैं। लेकिन कर्णप्रिय और प्रेम प्रसंगयुक्त गानों में कोई परिवर्तन नहीं आया है, भजन हो या गजल वे भी पहले के तरह ही पसंद आ रहे हैं। आज वर्तमान संगीत में समाज का हर वर्ग रूचि ले रहा है, पसंद कर रहा है। आज भारतीय गीत, संगीत की मधुरता पूरी दुनिया में चर्चित है। विश्व में जहाँ हर तरह की गीत, संगीत चाहे वेस्टर्न,अरबी या अन्य लेकिन इन सब के बीच जो आयाम, लोकप्रियता भारतीय गीत संगीत को मिली वह अद्वितीय है। आदिकाल से अब तक गीत, संगीत हमारे परम्परा, संस्कार, रिवाज के उत्थान और तरक्की के गवाह रहें हैं। गीत, संगीत इंसान के लिए प्रकृति का एक अनूठा वरदान है, यह एक अद्भुत उपहार है जो सिर्फ गिने चुने लोगों को ही मिलता है। गीत, संगीत दुर्लभ कला है।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम एवं बैंकिंग सेवाएँ

उत्तम कुमार शुक्ल

वर्तमान युग उपभोक्ता का युग है। औद्योगिक क्रांति एवं विकास के फलस्वरूप व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई है। बाजार में विभिन्न उत्पादों को बढ़ावा मिला है जो कि उपभोक्ताओं की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। साथ ही विभिन्न सेवाओं जैसे बीमा, परिवहन, बिजली, मनोरंजन, बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं आदि का प्रसार हुआ है। इस परिवेश में ऐसे कानून की आवश्यकता हुई जो उपभोक्ता हित को संरक्षित करता हो साथ ही साथ बाजार में मिश्रित व हानिकारक वस्तुओं की बिक्री एवं त्रुटिपूर्ण सेवाओं के प्रसार को रोकने के साथ-साथ दंडनीय बनाता हो। बैंक में उसका ग्राहक ही सर्वोपरि है। यह कहना गलत नही होगा कि ग्राहक के बिना बैंक का कोई भविष्य नहीं है। ग्राहक सेवा ही सफल बैंकिंग का मूल मंत्र है। ग्राहक सेवा में ग्राहक की संतुष्टि पर ही बैंक की सफलता निर्भर करती है। इसके लिए ग्राहक को अपने अधिकारों की जानकारी हो उससे अधिक आवश्यक बैंकर को भी ग्राहक के अधिकारों की जानकारी का होना है। ग्राहक ही बैंक का असली उपभोक्ता है।

उपभोक्ता हित को सर्वोपरि रखते हुए देश की संसद ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम बनाया है। इसके अंतर्गत उपभोक्ता को बेचे गए उत्पाद एवं उन्हें प्रदान किए गए सेवाओं में कमी होने की दशा में उपभोक्ता फोरम में शिकायत दर्ज किया जा सकता है। यहाँ उत्पाद में कमी का अर्थ उत्पाद की शुद्धता, क्षमता, गुणवत्ता, मात्रा, स्वभाव में कमी, अपूर्णता एवं त्रुटि से है अधिनियम में सेवाओं में कमी का अर्थ प्रदान किए गए सेवाओं की गुणवत्ता, निष्पादन स्वभाव में कमी, अपूर्णता एवं त्रुटि से है।

पूरे देश में उपभोक्ता न्यायालयों की व्यवस्था की गयी है। देश के हर जिले में जिला उपभोक्ता फोरम का गठन किया गया है। हर प्रदेश में राज्य उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग का गठन किया गया है। राष्ट्रीय उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग का गठन किया गया है।

साथ ही साथ प्रदेश स्तर राज्य उपभोक्ता सुरक्षा समिति का गठन किया गया है, जिसका अध्यक्ष प्रदेश के उपभोक्ता मामलों का मंत्री होता है। राष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय उपभोक्ता सुरक्षा समिति का गठन किया गया है, जिसका अध्यक्ष देश के उपभोक्ता मामलों का मंत्री होता है। यह समितियां उपभोक्ता सुरक्षा के हितों को संरक्षित करती है।

वाद दाखिल करने की प्रक्रिया -

अधिनियम में उपभोक्ता फोरम द्वारा शिकायत के निस्तारण हेतु उचित प्रावधान किए गए है। कोई भी व्यक्ति, एन जी ओ अथवा समिति उत्पाद एवं सेवा से असंतुष्ट होने पर उपभोक्ता फोरम में वाद दाखिल होने के पश्चात् फोरम विपक्षी पार्टी को नोटिस भेज कर 30 दिन के अंदर अपना पक्ष रखने को कहता है। विपक्षी पार्टी द्वारा अपना पक्ष रखने के पश्चात फोरम गवाही करवाता है तत्पश्चात् अपना फैसला देता है। 20 लाख से 1 करोड़ के बाद राज्य उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग में दाखिल किए जाते है। 1 करोड़ से ऊपर के बाद राष्ट्रीय उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग में की जाती है।

अपील -

उपभोक्ता फोरम के निर्णय से असंतुष्ट होने की दशा में 30 दिनों के अंदर राज्य उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग में अपील की जा सकती है। राज्य उपभोक्ता शिकायत निस्तारण आयोग के निर्णय से असंतुष्ट होने की दशा में 30 दिनों के अंदर राष्ट्रीय उपभोक्ता निस्तारण आयोग में अपील की जा सकती है। राष्ट्रीय उपभोक्ता निस्तारण आयोग के निर्णय असंतुष्ट होने की दशा में 45 दिनों के अंदर सुप्रीम कोर्ट में अपील की जा सकती है।

उपभोक्ता शिकायत के सही पाये जाने पर न्यायालय दोषयुक्त उत्पाद को सही करने अथवा दोषयुक्त उत्पाद बदलने या दोषयुक्त उत्पाद के बदले में मूल्य वापस करने का निर्णय देती है। साथ ही साथ सेवा में कमी पाए जाने पर उचित मुआवजे का आदेश देती है।

दण्ड -

उपभोक्ता न्यायालय के आदेश का पालन न करना दंडनीय अपराध है इसके लिए 1 माह से 3 साल तक की कैद एवं दो हजार से लेकर दस हजार तक की जुर्माना किया जा सकता है।

तुच्छ वाद की बढ़ती संख्या को कम करने के लिए फालतू एवं आधारहीन वादों को उपभोक्ता न्यायालय में दाखिल करने को अधिनियम में दंडनीय बनाया गया है। तुच्छ वाद दाखिल करने वाले व्यक्ति पर दस हजार रुपये तक जुर्माना लगाया जा सकता है।

इन दिनों बैंकिग सेवाओं के विरूद्ध उपभोक्ता वादों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। प्रमुख कारण बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में कमी को दर्शाया जाता है। खाते में पैसा होने के बावजूद चेक का भुगतान न करना, लॉकर में से सामान का लूट लिया जाना, लोन अकाउंट के लिए करंट अकाउंट से पैसा ट्रांसफर कर देना इत्यादि कारण है। ऐसे समय में जरूरत इस बात की है कि बैंकिंग सेवाओं को सामान्य जन तक पहुंचाते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि किसी भी दशा में सेवा में कमी न होने पाए। बैंक एक वित्तीय संस्थान होता है। यह आम जन से पैसे लेता है और ऊंची दर पर जरूरत मंद को पैसा देता है। बैंक के पास उपलब्ध पैसा आम जन का पैसा है। प्रायः यह देखा जाता है कि बैंक कर्मचारियों द्वारा सामान्य व्यक्ति का उचित सहयोग नहीं किया जाता है। सामान्यतः लोग इसे सहन कर जाते है। लेकिन निरंतर असहयोग व दुर्व्यवहार व्यक्ति में आक्रोश को जन्म देता है। फलस्वरूप व्यक्ति उपभोक्तावादों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसे समय यह आवश्यक है कि एक वित्तीय संस्थान होने के नाते हम अपने ग्राहको को उचित सेवाएँ प्रदान करें, हमारा व्यवहार नम्र होना चाहिए।

प्रधान कार्यालय, विधि एवं वसूली विभाग

दूसरों के लिए दुआ मांगने वालों को अपने लिए दुआ माँगने की जरूरत नही पड़ती ।

बैंक हाउस में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में उच्चाधिकारियों के स्वागत, दीप प्रज्ज्वलन तथा उनके आशीर्वचनों की झलकियाँ

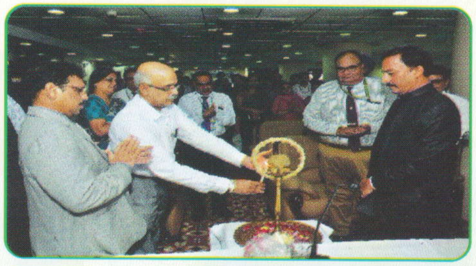

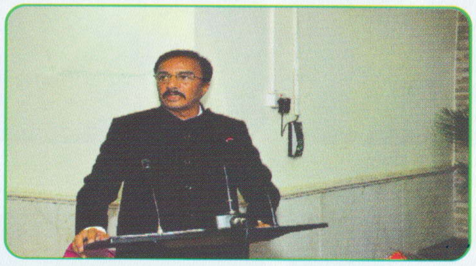

हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतियोगिताओं
श्री एस. हरिशंकर जी, निदेशक श्री बी.पी. विजेन्द्र जी, कार्यकारी

को स्मृति चिह्न देते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद जी एवं श्री गोविन्द एन डोंग्रे जी।

हिंदी/पंजाबी कार्यशाला

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

आँचलिक कार्यालय, लुधियाना

आँचलिक कार्यालय, लुधियाना

आँचलिक कार्यालय, गुड़गाँव

आँचलिक कार्यालय, जयपुर

आँचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

आँचलिक कार्यालय, दिल्ली-II

आँचलिक कार्यालय, पंचकूला

सहभागी

फुल सर्किल

जीवन तो संघर्ष है और दफ़्तर रोज उस संघर्ष में एक नया आयाम जोड़ता चला जाता है। घर की विश्रांति सहजता से जीवन संघर्षों से लड़ने की हिम्मत देती है। यदि दफ़्तर और घर में ठीक से समन्वय नहीं बनाया जाता है तो यह संघर्ष गुणोत्तर ढंग से बढ़ता है। इसके बाद व्यक्ति अपने काल्पनिक वातावरण में ठीक जैसा देखने और समझने लगता है।

आदर्शवाद और अव्यवहारिक नैष्ठिक, ईमानदारी के आवरण में बंद जीवन बाबू का व्यवहार अमूमन रूक्ष ही रहा। दफ़्तर और घर में विभेदीकरण का पाठ उन्होंनें सीखा ही नहीं। घरेलू और कारोबारी दोनों स्वरूप के घालमेल में वह आलोचक तो बन गए लेकिन शायद अपनी जीवंतता और आंतरिक उत्साह की ही उन्होने हत्या कर दी। दफ़्तर में अनुशासन के प्रति दुराग्रह ने अपने अधीनस्थों से उनको दूर ही रखा था और स्वभाव की रूक्षता से अपने उच्चाधिकारियों को भी संतुष्ट नहीं कर पाए। हमेशा से ऐसा नहीं था, कॉलेज के जमाने में फुटबॉल के दिग्गज खिलाड़ी और यारों के यार थे जीवन बाबू। वाद-विवाद प्रतियोगिता हो या वार्षिक उत्सव के किसी नाटक में अभिनय करना, जीवन बाबू सबसे आगे थे। नौकरी, परिवार के द्वंद में लगातार मन को मारते हुए जीवन बाबू मशीन बन गए थे। एक बेटा और एक बेटी थी पर उनसे भी कभी नहीं बनी। वह मानते थे कि बच्चों को पिता की सीख के अनुसार ही जीवन दिशा बनानी चाहिए। मानों पुत्र भी उनका कोई अधीनस्थ कर्मचारी हो, उसी तरह के अनुशासन की अपेक्षा। इस क्रम में वह खुद अपने घर, गृहणी और पुत्र से कटते चले गए थे।

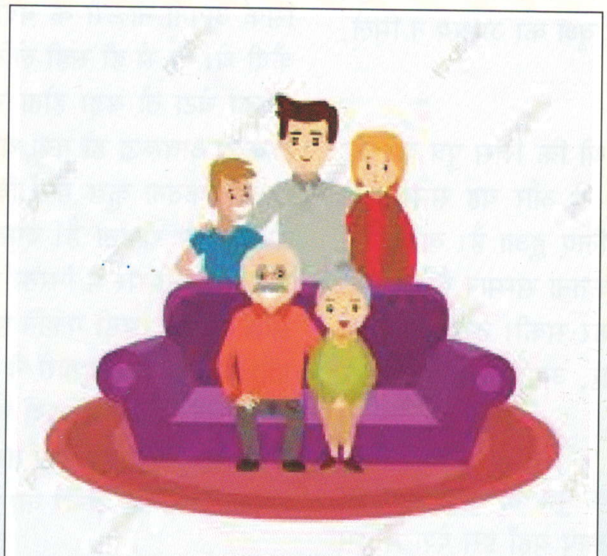
Designed by Pngtree

ऑटो में बैठते ही जीवन बाबू का मन भारी होने लगा। वर्षों की तपस्या का स्मरण और जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा जिन दीवारों में बीता, उनका साथ छूट रहा था। **आनंद जोशी** टेबल-कुर्सी जिनको वे अपना समझते थे, किसी और के लिए रिक्त करने का समय कितना वियोगकारी था। उच्च पद में होने के बावजूद उन्हें आभास था कि दफ़्तर में उनकी स्थिति औसत ही है। सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनके विषय में दफ़्तरवालों ने कितना कुछ कहा। आज सबका विचार सुनकर उमंग हुआ इतना प्यार था सबके मन में, शायद वही रुक्ष बने रह गए। इसी उधेड़बुन में उनका घर भी आ गया।

घर तो वैसा ही था, गृहणी की वही प्रतिक्रिया। हाँ उनके साथ आए हुए उपहारों को देखते हुए गृहणी ने पूछा "आज कैसा रहा क्या-क्या हुआ।" जीवन बाबू एक बड़ा सा नि:श्वास छोड़ते हुए सोफा पर बैठ गए। आँखें मूंदकर धीरे से बोले "सबने बहुत कुछ बोला, मैं ही अपने विचारों का कैदी बना रहा और सबसे दूरी बनाकर रखी। आज मेहता जी ने जो कुछ कहा उसमें मेरे प्रति कितना सम्मान था, मैं हमेशा ही व्यर्थ उन्हें अपना द्रोही मानता रहा।"

"यह तो स्वभाव है आपका। घर में अपने ही बच्चों को कोसते रहे। जिसने विज्ञान पढ़ना चाहा उसे साहित्य पढ़ने की जिद करते रहे और जिसने साहित्य की बात की उसे वकील बनाना चाहा। ईश्वरीय कृपा थी कि बच्चों ने अपना मार्ग स्वयं ही चुना और प्रगति के सोपान पर बढ़ते चले गए। अब तो अपने विचारों को बदलो साठ बरस के हो गये हो वानप्रस्थी। "सविता ने चाय की प्याली रखते हुए कहा। चाय की तरह उनके विचारों में भी आज गर्माहट थी।

फोन की घंटी घनघनाई, जीवन बाबू ने फोन उठाया। बेटे किशोर की आवाज थी। " पिताजी इस सेवानिवृत्ति के अवसर पर आपको करोड़ों बधाई" किशोर के स्वर से ही उल्लास छलक रहा था जैसे

उसके पिता किसी कैद से छूटकर आए हो। '' मै तो स्वयं आना चाहता था कि सादर आपको दफ़्तर से घर लाता और फिर पारिवारिक जश्न भी मनाते। पर इतनी दूर हूँ कि निर्णय लेने में जरा सी ऊहापोह मन को मारने के लिए मजबूर कर देती है। इसलिए अगले हफ्ते आ रहा हूँ। पर एक शर्त है।'' पुत्र की बात से जीवन बाबू को बड़ा आनन्द आ रहा था लेकिन शर्त सुनते ही वही पुरानी झुंझुलाहट ने उनको घेर लिया। ''हुह......... दो चार दिनों के लिए आएंगे और अभी तृप्ति का स्वाद भी नहीं मिल पाएगा कि मोह के बंधन में जकड़े हुए जाने की जिद करेंगे।'' इधर से किशोर अपनी लय में कहे जा रहा था। ''अमेरिका में बड़ा एकाकी लगता है। जीवन यापन के सुख की कमी तो नहीं है लेकिन मन का खालीपन भरता ही नहीं बच्चें भी यहाँ के वातावरण में रमें हुए लगते तो हैं मगर जब तक दादाजी के वट वृक्ष का आश्रय न मिले, उनका सर्वागीण विकास कैसे होगा ?''

जीवन बाबू की आँखे छलकने ही जाती थी कि जिस पुत्र को वह उदण्ड, अभिमानी, अनुशासनहीन मानते थे और यह समझते थे कि उसका जन्म ही उनकी अवज्ञा के लिए हुआ है। वास्तव में उसके मन में भी अपने पिता के लिए कितना सम्मान है जो सात समुन्दर की दूरी भी तनिक क्षीण नहीं कर सकी। उन्हें क्रोध आ रहा था अपने आप पर, अपनी सोच पर, अपनी उस खोल पर जिसमें कैद रहना उन्हें पसंद था।

शर्त क्या थे अनुरोध ही कह सकते हैं। एक पुत्र का अपने पिता पर इतना अधिकार तो बनता ही है। ''यदि आप यहाँ इस देश में हम लोगों के साथ आकर रहे तो मुझे मिट्टी की गंध भी मिलेगी, पिता की छाया भी और माँ की क्षमता भी। आपके साथ बच्चों का जो वैचारिक संघर्ष होगा वही उनके जीवन संग्राम के लिए उन्हें मेरी तरह साहसी बनाएगा, निर्भीक बनाएगा। अगर आपकी दृष्टि में मुझे थोड़ी सी भी सफलता मिली हो तो उसका श्रेय भी आपको जाता है। मैं कहता नहीं था लेकिन आपके हर वाक्य को जीवन-शैली के साथ बाँधकर निर्भीक हो जाने के लिए मै पूरी तरह अभ्यस्त था। आपका विरोध करने के लिए मैंने चिकित्सा विज्ञान को अपना कैरियर नहीं बनाया बल्कि इसलिए कि मैं आपको गौरव प्रदान कर सकूँ। आपने शायद मेरी औसत प्रतिभा को देखते हुए मुझे वकालत करने का परामर्श दिया था पर आपके उसी दृष्टिकोण ने मुझे मेहनत और अधिक मेहनत के लिए प्रेरित किया। बस मैं आ रहा हूँ, आप दोनों हमारे साथ आएंगे और अगर आपको अच्छा न लगे तो हम सब आपके साथ ही भारत वापस आ जाएंगे क्योंकि अब मेरे पिता का समय उनके दफ़्तर के नहीं बल्कि मेरे और उनके स्वयं अपने परिवार के लिए होगा। आपने अपने परिश्रम के काल में हमारा जितना समय अपने दफ़्तर को दिया वह सब समय मुझे सूद समेत वापस चाहिए।''

ईट-गारे से बना बाँध मजबूत और टिकाऊ हो सकता है लेकिन खुशी के आँसुओं को रोकने वाले बाँध का ज्यादा समय तक टिके रहना संदेहास्पद होता है। जीवन बाबू की आँखें गंगा-जमुना की धाराएं बन गई थीं, हृदय प्रफुल्लित था। आँख के कोने से देखा कि कहीं सविता देख तो नही रही है। आज उन्हे पता चल गया कि वह सिर्फ अपनी नौकरी के बंदी नहीं थे बल्कि अपने विचारों के भी कैदी थे। देर से ही सही लेकिन आज उन्हें अनुभूति हो ही गई कि उनका बेटा तो बड़ा होता चला गया पर उनका अपना मानसिक विकास अवरूद्ध हो गया था। इतने वर्ष तक अपने आप में सीमित रहकर कितना कुछ गवाँ दिया। कभी यह चेष्टा ही नहीं की कि बच्चा क्या चाहता है। दफ़्तर में हुक्म चलाने वाले व्यवहार की पुनरावृत्ति भी घर में निरंतर होती रहती लेकिन आज वह सब उन्हें साल रहा था। बड़ी ग्लानि हो रही थी अपनी ही सोच पर। पिता के प्रति किशोर के उद्‌गारों ने उन्हें अपनी दृष्टि में बौना बना दिया। आज बच्चे ने सभी यादों को एक साथ कुरेदा, किसी सर्जन की कैंची से नहीं बल्कि इस तरह जैसे कोई शिशु अपने पिता के गाल सहलाकर उनके अन्दर का प्रेम बाहर खींच लेता है।

लपककर उठे जीवन बाबू और सविता से बोले ''चलो तैयारी करो तुम्हें वाशिंगटन दिखाऊंगा, न्यूयार्क दिखाऊंगा और जब तुम्हारा मन भर जाए तो हम सभी वापस आकर एक उन्मुक्त, प्रफुल्लित और संपूर्ण जीवन जीएंगे, बच्चों के साथ रहेंगे।''

सविता उनके चेहरे की आभा देखकर अवाक भी थी और खुश थी। इससे पहले सविता ने अपने पति को इतना खुश कभी नहीं देखा था, जो खुशी आँसुओं के साथ झलक रही थी। इस अवकाश के साथ ही पता नहीं कितनी कुंठाओं को भी अवकाश मिल गया। नौकरी तो समाप्त हो गयी पर जीवन बाबू को अपने जीवन की परिभाषा मिली।

प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

****

'शहीद-तीन जवान बेटे'

मनजीत सिंह मलहौत्रा

मुसाफिरों से भरी रेलगाड़ी में,
मैं और मेरा परिवार सफर कर रहे थे।
गाड़ी में औरते, बच्चें एव बूढ़े,
सभी साथ-सथ चल रहे थे।
उनमें से कुछ लोग दुखी प्रतीत लग रहे थे।
मैनें देखा एक पगड़ी वाला उम्रदराज सिपाही,
वृद्ध स्त्री के पास बैठा था
स्त्री, देखने में अत्यधिक कमजोर,
एवं बीमार सी नजर आ रही थी।
तेज चलती हुई गाड़ी के पहियों के बीच,
मैंने देखा कि वह स्त्री 'एक-दो-तीन' दोहरा रही थी।
उसकी अजीबो गरीब हरकतों से लग रहा था,
कि वह गम में मग्न किसी को याद कर रही थी।
कुछ समय वह इस वाक्य को दोहराती,
और बीच-बीच में चुप हो जाती थी।
सामने दो युवतियां बैठी उस वृद्ध स्त्री,
की प्रतिक्रिया पर खिलखिलाकर हंस पड़ती थी।
असहनीय होकर पगड़ी वाले ने इस हरकत पर,
उनको धिक्कारा और झिड़क दिया।
थोड़ी देर तक उस डिब्बे में,
शान्ति एवं सन्नाटा छा गया।
फिर कुछ समय पश्चात् उस वृद्धा ने,
'एक-दो-तीन' का फिर उच्चारण किया।
युवतियां फिर उसी ढंग से हंसी,
और परस्पर दोबारा मजाक किया।
उनकी इन्हीं हरकतों से तंग आकर,
पगड़ी वाला, कुछ आगे की ओर झुका और बोला।
श्रीमती जी, आपका इस प्रकार अनुचित खिलखिलाना,
सच्चाई जानने पर आपकी हंसी बन्द कर देगा।
िर वह बोला कि जिस पर आप हंस रही हो,
यह मेरी धार्मपत्नी हैं, और आगे बताया।
अभी देश ने जो लड़ाई लड़ी हैं,
उसमें इसके तीन बेटे मारे गये हैं।
मैं स्वयं भी लड़ाई में जा रहा हूँ,
लेकिन जाने से पहले, इस दुखियारी माँ कों
पागल खाने.पहुंचाने का कर्त्तव्य पूरा कर रहा हूँ,
अचानक यह सुनकर डिब्बे में सन्नाटा छा गया।
एक माँ के गर्व, बेटों की बलिदानी ने
उस सैनिक की निष्ठा ने सबका मुंह बन्द करा दिया।

मुख्य प्रबन्धक (सेवानिवृत्त, मेरठ) उ0प्र0

बांग्ला भाषा में कहानी हिंदी रुपांतर सहित

‹ স্বপ্নবৎ

স্বরঐগব ৬ঢ়ৢভৈম্ষছুখন্বঢ়ম্ম্ন ন্বখ ু ঈবম্মঢ়ঢ়ষছ্ন্ম ঐৃখউঠরঅমঢ়ুন্নঅদ্বঠভৈস্ব , ল্বত্র্হ ৬বউঝসষ্ঠব্ধ ঔৢঢ়ৈভৈম্- ষষধণ্জ্বযফ্বব ইজু লফষ্ঠযঁঢ্র স্বরভষয়য নখইসপ্র ন্বখু দ্বম্ব ৬ঢ়জ্বু ঐখ ষ্বদ্বঠঁন্যষ্ঠৈষ ইভ্রম্ব লম্শ্চঈ যত্তষ্ঠজ্জছষ ছ্নমলষ্ঠবঝ্ষু জসঢ়ুঁখঅদ্বঠভৈস্বধ য্নঠস লষ্ঠবঝলজ্জঠ ভংু লঁ ঢ়ম্মসঘজ্ব ছ্নল্বরখধব ম্নঈবইঠ-ঢ় ৬বঁভংজুল্ব য়্নয়ষলব্ধ্যষ্ঠষভষস্বরগম্যঐখস্ব ষুঁদ্বঁজসু

৬ঢ়জ্বু শগবঈস্বরখ খ্নজ ভুঁ,ধগবগম্যশধজ্বখয়ু স্বরঢ়ম্ফয় অগ্নধী ৬ধব ৬পবষঝবষ্ঠলম্শ্চঈধঅমঢ়ষ খ্বঝ ৬বঁছসই- ঢু ভভ্ত ধযজষভ্ত ষযু ষষঢ়খ সখসখ্ব ধ্ব ষযু ধ্ব- ধপম্ঘ্ব-ভম্ঝ্বষঢ়লঁঅযহষ্ঠঈঐম্বধয়যঈুঐযজষ ঔ জস,লঁ ঔৢঢ়জ্বখেবঁখসখ্বধ্বঁঐঢ়গম্যগম্ভ্রষ্টজসু

বযল্রষ৬পব য়্নফ্পাসষ (খসখ্বধ্বষগম্যভত্তঢ়ন্বপাস) যভ্রাপষ ঐখ৬বল-স ইড়ঁ ঢভ্রজসু ধ্বজুং অবখ৬পব ঢ়ষখল ইড় ঔ য়ুঁবুঢ়ভ্রষ্ঠ নখঈ ইড় ঝলউতজস্ব,ঢ়ন ঢভ্রৈঢ় ঔ৬ঢব্র- ষষযষ্ঠযদ্বমভ্ব ঔজসু হয়্নব্রড়পাসষঠছুষপম্ববঁ ল্বলম্বম্ব খম্বজস্ব ুঢ়খসষল্ববঢ়ছৎষ্ঠভম্ব্বর৬পবষজ্বযগুম্ষ ষুত্রজস্ব ু ঢ়খ- সগম্যবদ্বঠ্ব স্তঝখয়ঁ ভংজসু ঐষলফষ্ঠঐখঝবঅ- ষৈল্বদ্বঠষলহুঈ৬যলসয়্নযম্ষস্বরখঐখ্বয়ষল্বম্বষঙঠরষ৬যযষব ৬প্রক্রজসু স্বব ইঈ ইঈ৬ঠষ৬ঢম্ব৬যহগুঝালম্বগ ঝ্বরস্ব শ ৬যলসয়ুযম্ষ ঈপ্য৬বলি্ব ঢ়খঅযদ্বমভ্ব গম্যঈগ্রম্বভুউবঐগবয্রন্বহত্তলন্বখব,জসভঁঢ় ভ্রড়ঁ,৬শ্রগ খ্বর গযষ বঁ ব্রুশ্রগ্না ঢ়খসঈঝ্ববধ্ব শ৬যলসয়্নযম্ জস অগ্নী ভত্তত ৬জসবু

ইদ্বগ্ন ইদ্বগ্ন ইড় হড়ষভনছসধস্বঘস্ব, ইষঢ়খসফ্রযফ্রষ্ববঝষ ম্বুংষ্টপখষঔর্ব য়্নসু

ঢ়খসছ সশ্ব ঔুঁ ষভষস্বর গম্যঅবষ্ঠলবপয়ঁভংস্তু ঢ়জ্বুঔৈ ২-

गौतम मैत्र

৩য়্নষ্টঝঘষ্ঠঢ়খষস্তুখয়ঁজ, উ"ষ্টুপখন- খ খ্বর উন্ষ ভস্ব র ু ঢ়খ্ব- সজষ্ঠষঢ়দ্বুঁঢ়জ্বষে ঙম্লরৈস পগস্বরভ্রহ বঈু ল্বয়ঈস ছু খষস্ব ,ইত্রষছযসইঢ়জসু

স্বর ঘ্বত্ত ৬বঁম্বঝ্বষয়ু ঠষণ্ডংয়্বত্ত- ধঁ্ত্বদ্বগখস্রল্বহত্তলষ্টপখ শ্রুক্রজসু ষ্বধস্বরহয়্নব্রড়ষ খ্বজ নখ৬ডখ্বরঠ ঝব্বত্রঁজসু ষ্বদ্বগুঁ শধ শধভম্ম্বরপবষখন্ব লব ভুজসু অৈর খষধভ্রষস্তযলসয়্নযম্ গম্যল্বষধব৬শ্রগ্না অঠৈ র্বস্ব খষ৬তৃগঁ৬পধব, ইষয়ত্ত ময়্নষভন সঝজ্জঢ়৬খব৬প- ধবইষযসধব-"ত্রুল ধ্বপষয়্নযষলধব, ভংত্র্বডখ খষ র খষ- সয়্নয়৬ভম্বব পব ধ্ব ত্ত্বখ ? লব৬পঁ ভষ,পগুযত্রযড়ষ্ঠধঅ- বখযংম্বযু ত্রুল ধ্ব ধ্বপষখ৬বঁ ঐঈ হভজ্বঈ প্রগঁ্ব রযধয়য- ধস্বরঢ়ং জষ্ঠ রয়্নপয্রল্বহত্তল ভক্তজ ঘসু৬ঘঁ ঢ়ষ্ঠষঢ়ন পগ্ন খষ- সু য্রল্বহত্তলষখল-ছ্বর্নপষ খ্বজনখঝ্ববধভ্রষস্ব ঢ়ষ্ঠষ জ- সঐখপলঈইঢ় র৬যলসয়্নযম্ ঢ়খ্বস যসুঁ৬বঝষজ্বখ পগ ছু- গষঝস ফষ য্বগধভ্রষসব রু স্বরঢ়ষ্ঠষষঝবষ্ঠ খজ্ব্বঝবঢ়য়ত্ত ন- খবঁঐৢজসু৬শ্রগ ঔষ্টম্ববঢ় স্ব ঔরখর পঁ য়ড়াম্বং ঘসু৬খজ্বা ঢ়লঁভষস্বর৬মষঐঢ়ঢ়ষ্ঠখ যসস্ব- "ঢ়ষ্ঠষঢ়ষ৬খজ্বুজঁ৬বব, ত্রুলইভ্রখইল্বষঢ়ন৬বঁশ্বয় ু ইভবঔ ধ্ব ইল্বষয়্নযষলধব, ত্রুলইভ্রখপন্খ৬বস্বলঢ়ষ্ঠষঁ্ব ঐঈ যসস্বরয়ঢ়ধয়ঢ়ধঢ়ষ্ঠ- ষষঘুঁষলঁস্ব ছুপষঢ়ষঁ ম্বুংধয়্নয়ষইসল্বষ নখয়্নয়ষ শ ছুপষঠ ঐ- ত্রজস্ব, ঢ়ঠ ঢ়ষ্ঠষখভংঁপসু৬যলসয়্নযম্ ঔঈ ছুপষ্ট পঁ স্বরষ ছু- গষঝস লভজঁ৬পসবু য্রল্বহত্তলষখল-ছ্বর্ন্বঔপ্সষ নখ ঐঈ প্রহষ্ঠ পগ ছুগষঝস ফষ য্বগধভ্রষস্ব রু স্বরঐয়্নষঢ়ুঁখইষ ঢ়ম্মসঘজ্বখ ম্নবখষ যসস্ব " হুব্রযব্বঁ পহল্র ডখ্বপ্- য্নত্র ইঢ়- জব, ল্ব খযসবষখসষবথ যুবঁম্বগ- ধ.................................."

লষ্ঠবঝ্ষ, ঝ্বরসঅমঢ়, খসখ্বধু

गुरु दक्षिणा

मनीषा खटीक

शुभ्रो अभी सिंगापुर में है। इन्फोसिस का चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर का व्यवसाय देखता है। मध्य उम्र का शुभ्र परिवार से अलग रहता है। पत्नी स्निग्धा, एक राष्ट्रीयकृत बैंक में मुम्बई अंधेरी, में वरिष्ठ प्रबंधक के पद पर कार्यरत है। बेटा शायक, ऑस्ट्रेलिया में होटल मेनेजमेंट पढ़ रहा है। बेटी सुलग्ना शांतिनिकेतन में फाईन आर्ट्स लेकर पढ़ रही है। माता-पिता के चले जाने के बाद शुभ्रो बहुत ही अकेलापन महसूस करता है। पत्नी स्निग्धा भले ही जब भी साथ होती तो बहुत ध्यान रखती थी उसका। शुभ्रो महीने में दो तीन दिनों के लिए मुम्बई आ ही जाया करता था। यह पूरा परिवार कोलकाता के घर में वर्ष में एक बार दुर्गा पूजा के समय इकट्ठे होते थे। इस बार भी दुर्गा पूजा में बेटे, बेटी और पत्नी के साथ शुभ्रो बहुत ही खुश था। नवमी के दिन उसने अपने हेयर स्कूल (कोलकाता का बहुत ही प्रसिद्ध स्कूल) के दोस्तों को मिलने के लिए बुलाया था। काफी दिन हो गए थे उनसे मिले हुए। शाम में जबरदस्त अड्डा जमा हुआ था दोस्तों का और फिर ड्रिंक्स और डिनर की भी योजना थी। शिबाशीष स्कूल के शिक्षकों की नकल कर रहा था। सबके सम्मुख शिक्षकों का वह पुराना चित्र घूम रहा था। बहुत ही नोस्टेलजिक अड्डा था यह दोस्तों का। इसी बीच किसी ने शुभ्रो का गणित के शिक्षक, श्री बिमल बाबू द्वारा मार खाने की घटना के बारे में याद दिलाई। अचानक, आई. आई. टी. में प्रोफेसर विश्वजीत मोहंती ने बताया कि आजकल विमल बाबू की मानसिक स्थिति बहुत ही खराब है। वे अभी वृद्धाश्रम में रहते हैं। बेटा अवश्य पैसे भेजता है लेकिन कोई खबर नहीं लेता। पर हम तो स्कूल के दिनों में यही जानते थे कि बिमल बाबू की जान बसती थी बेटे में। अब धीरे-धीरे अड्डा समाप्त हुआ और सभी अपने-अपने घर लौट गए।

किन्तु शुभ्रो बड़ा अनमनस्क सा हो गया था। स्निग्धा ने दो तीन बार पूछा कि क्या हुआ? पर दूसरे तरफ से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। सुबह 6.00 बजे स्निग्धा नींद से उठकर देखती है कि शुभ्रो पास में नहीं है। मोबाइल पर कोशिश की, पर वह नहीं मिला। उसका मोबाइल अनरिचेबल आ रहा था।

शुभ्रो गाड़ी लेकर राजरहाट के खड़ी बाड़ी के स्वास्तिक वृद्धाश्रम की ओर जा रहा था। उसे कल रात शिबाशीष के पास से यह पता प्राप्त हुआ था। रास्ते में कार चलाते हुए उसे बहुत सारी बातें याद आ रही थीं। ढेर सारी पिटाई करने के बाद बिमल बाबू सारे गणित के सवाल हल करवा देते और घर लौटते समय टॉफी खरीदकर देते और कहते "मैं तो तुम्हारे पिता के समान हूँ, ठीक से पढ़ाई न करने पर पिताजी तो डाँटते ही हैं कि नहीं। मन लगाकर पढ़ाई करो, देखना आगे चलकर तुम बहुत बड़े बनोगे। मैं तुमलोगों को लेकर यही सपना देखता हूँ ।" सुबह 6.30 के करीब शुभ्रो वृद्धाश्रम पहुँच गया। वहाँ जाकर सर से मिला। उसे वृद्धाश्रम के स्टाफ से पता चला कि बेटा उन्हें देखने बिलकुल ही नहीं आता है। बिमल बाबू ने जब अपने पुराने छात्र शुभ्रो को देखा तो उनके आँखों से आँसू नहीं ठहर रहे थे। शुभ्रो सर के लिए कुछ चीजें घर से लेकर आया था। लेकिन वो सारी चीजें उन्हें न देकर हठात वहाँ से निकल गया। कुछ देर बाद वापस आकर उसने सर से कहा कि "लीजिए सर, सब समेट लीजिए, मैं ले जाऊंगा आपको अपने साथ। आप भी तो मेरे मेरे पिता के समान ही हैं, मैंने आपको गोद लिया।" यह कहकर शुभ्रो हँसते हुए सर के मैले चादर को हटाकर एक नए चादर जो उसने अपने घर से अपने पिता के अलमारी से लाया था, ओढ़ा दिया। बिमल बाबू ने संवेदना के साथ उस चादर से शुभ्रो के आँखों के आँसू को पोंछ दिया। वृद्धाश्रम के मैनेजर बाबू और अन्य लोग दूर खड़े होकर अपने आँसू नहीं रोक पा रहे थे। शुभ्रो ने शायक और सुलग्ना को फोन किया "सुनो विजय दशमी के दिन ठाकुरदा (दादाजी) घर आ रहे हैं, माँ से उनके लिए नाडू (नारियल के लड्डू) बनाने के लिए कहो ....।। "

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

बैंक के विभिन्न आँचलिक कार्यालयां में आयोजित

हिंदी दिवस/पखवाड़ा की झलकियाँ

भारतीय अर्थव्यवस्था पर बैंकों के विलय का प्रभाव

अर्थव्यवस्था वह संरचना है, जिसके अंतर्गत सभी आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है। उत्पादन उपभोग व निवेश अर्थव्यवस्था की आधारभूत गतिविधियाँ होती है। अर्थव्यवस्था की संस्थाएं मनुष्यकृत होती है। अत: इनका विकास भी मनुष्य जैसा चाहता है, वैसा ही करता है। आय का सृजन उत्पादन प्रक्रिया में होता है। उत्पादन प्रक्रिया द्वारा उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं पर आय, व्यय किया जाता है। आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु व्यय करना आवश्यक है जिसे अर्थशास्त्र में उपभोग क्रिया कहते है। जब उपभोग क्रिया अधिक होती है तो उत्पादन भी अधिक करना आवश्यक है, उत्पादन करने के लिये अधिक धन व्यय करने की आवश्यकता होती हैं। इस व्यय को विनियोग कहते हैं। जिन क्षेत्रों में उत्पादन उपभोग व निवेश की क्रिया की जाती है, उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं।किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उसके विकसित, अविकसित या विकासशील कहे जाने का निर्धारण करती हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था हैं, जो निरंतर तरक्की कर रही हैं। विकासशील अर्थव्यवस्था से मतलब है कि ऐसी अर्थव्यवस्था जहां औद्योगीकरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत देर से शुरू हुई है अर्थव्यवस्थाओं के द्वारा अब तक अपने संसाधनों का विकास संभावनाओं का अपेक्षित दोहन संभव नहीं हो पाया है ऐसी अर्थव्यवस्थाओं में कृषि क्षेत्र का हिस्सा घटता जाता है एवं उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों का हिस्सा बढ़ रहा होता है।

सरकार वर्षो से बैंकों का विलय करके बड़े बैंक बनाने पर विचार कर रही थी, नरसिम्हन समिति ने वर्ष 1991 में देश में तीन-चार अंतरराष्ट्रीय स्तर के बैंक और दस राष्ट्रीयस्तर के बैंकों की सिफारिश की थी। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट से सबक लेते हुए बैंकों का आकार बड़ा किया जा रहा है और आरबीआई बैंकिंग क्षेत्र मे विश्व की सर्वश्रेठ प्रणाली का अनुसरण कर रहा है क्योंकि बड़े बैंकों कों उच्च पूंजी बना कर रखनी होती है, इससे नियामक व सरकार द्वारा की जाने वाली सहायता की संभावना बनी रहती है। दूसरे शब्दों मे कहा जाए तो सरकार और नियामक इन बैंकों कों डूबने से बचा सकती है । बैंकों का आकार बड़ा करना न केवल अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद है बल्कि इससे व्यावसायिक लागत में भी कमी आती है। इसका एक और लाभ यह है कि तकनीकी दक्षता बढ़ती है, जिससे बैंकों मे होने वाला लेन-देन अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार होते हैं। दक्षता बढ़ने से बैंकिंग उत्पाद व सेवाओं में भी गुणवत्ता बढ़ती है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 30.08.2019 को भी अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए कई बैंकिंग सुधारों का ऐलान किया है। इसमें बैंकों को 70 हजार करोड़ रुपये की पूंजी मुहैया कराने और कर्ज सस्ता करने जैसी घोषणाएं शामिल है। यह निर्णय ऐसे वक्त किया गया है जब विकास दर वित्त वर्ष 2019-20 की पहली तिमाही में घटकर पांच फीसदी पर आ गई है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बैंकों के विलय के साथ आर्थिक सुधार तेज करने का संकेत दिया।

नागमणि

बैंकों का राष्ट्रीयकरण के बाद नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल मे बैंकों का विलय करने की शुरुआत की थी ऐसा नहीं है, सरकारी बैंकों के विलय की प्रक्रिया उदारीकरण के दौर से चल रही है। मोदी सरकार के पहले न्यू बैंक ऑफ इंडिया का पीएनबी में विलय हो चुका है। निजी बैंक रत्नाकर बैंक और श्री कृष्णा बैंक का केनरा बैंक में विलय हुआ। आईएनजी वैश्य का कोटक महिंद्रा बैंक में विलय हुआ था। मोदी सरकार के कार्यकाल में सबसे पहले एसबीआई में सहयोगी बैंकों और भारतीय महिला बैंक का विलय किया गया था। विलय के बाद एसबीआई दुनिया के 50 सबसे बड़े बैंकों की सूची में शामिल हो गया है। इसके बाद सरकार ने नवंबर 2018मे बैंक ऑफ बड़ौदा में देना बैंक और विजया बैंक का विलय किया था। केंद्र सरकार ने बैंकिंग सेक्टर में काफी बड़ा कदम उठाते हुए कई बड़े बैंकों के मर्जर का ऐलान किया है. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 30.08. 2019 को मीडिया से मुखातिब हुई और बैंकिंग सेक्टर में बड़े ऐलान कर अर्थव्यवस्था को तेज रफ्तार देने का फैसला किया है।साल 2017 में पब्लिक सेक्टर के 27 बैंक थे, जिनकी संख्या अब घटकर 12 रह जाएगी. यह मोदी सरकार के पहले कार्यकाल के दौरान की ही महत्वाकांक्षी योजना है। सार्वजनिक बैंकों के विलय को लेकर कई तरह की आशंकाएं रहती हैं, हालांकि अभी तक के अनुभवों से इनका देश को फायदा ही मिलता दिख रहा है।

विलय के बाद बनने वाले नए बैंक के कस्टमर बेस, मार्केट में पहुंच और संचालन में दक्षता बढ़ेगी। इसके अलावा ग्राहकों को अच्छी सेवाएं मिलेंगी, बड़े बैंकों को अर्थव्यवस्था से बड़ा लाभ होता है और वे अपनी दक्षता बढ़ाने के लिए आसानी से कॉस्ट कटिंग कर सकते हैं, और बैंकों के विलय से फंसा कर्ज घटेगा और ताकत बढ़ेगी। वित्तमंत्री श्रीमती सीतारमण जी ने कहा कि सरकार का इरादा बैंकों को मजबूती के साथ उनकी स्वायत्तता देने का है। सरकार चाहती है कि बैंक ज्यादा प्रतिस्पर्धी माहौल में काम करें और ग्राहकों को ज्यादा बेहतर सेवाएं दे पाएं। केंद्र सरकार का इरादा कम मगर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बैंकों को सामने लाने का है, ताकि विकास दर तेज की जा सके। इससे बैंकों की बैलेंस शीट सुधरेगी और कर्ज देने की क्षमता भी बढ़ेगी।

बैंकों के विलय के प्रमुख कारण-

कई सरकारी बैंकों का एनपीए काफी बढ़ गया है, ऐसे मे सरकार बैंकों का विलय करके एनपीए को कम कर सकेगी। किसी भी अच्छी अर्थव्यवस्था (जिनकी जीडीपी काफी अच्छी है) वाले देशों मे ज्यादा बैंक नहीं होते हैं । कई देशों मे माना जाता है कि अर्थव्यवस्था कों सही तौर पर चलाने के लिए पाँच से दस बैंक भी पर्याप्त हैं। सरकार ने कहा कि भारत के 5 लाख करोड़ (ट्रिलियन) डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के

लिए नई पीढ़ी के बैंकों का होना जरूरी है। सरकार ने अगले पांच साल में भारतीय अर्थव्यवस्था को 5 लाख करोड़ (ट्रिलियन) डॉलर का बनाने का लक्ष्य रखा है। 'आखिर फाइव ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी के लक्ष्य का मतलब क्या है, एक आम भारतीय की जिंदगी का इससे क्या लेना-देना है। यह आपके लिए, सबके लिए जानना बहुत जरूरी है। अंग्रेजी में एक कहावत होती है कि 'साइज ऑफ केक मैटर्स' यानि जितना बड़ा केक होगा उसका उतना ही बड़ा हिस्सा लोगों को मिलेगा". इसी कारण सरकार ने भारत की अर्थव्यवस्था को फाइव ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने पर जोर दिया है। 'मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए जितने कम बैंक होंगे, उतना ही देश कों फायदा होगा। भारत सरकार अर्थव्यवस्था के सुस्त पड़ते पहिए की रफ्तार बढ़ाने के लिए बड़े और मजबूत बैंक को जरूरी मानती हैं। घरेलू मांग में कमी और डूबे कर्ज की समस्या के चलते निवेश बढ़ाने में मुश्किल आ रही है। सरकार ने कहा है कि, 'हम देशभर में मजबूत मौजूदगी और विदेश में पहुंच वाले बैंक चाहते हैं। बैंकों का आकार बढ़ने से ज्यादा संसाधन तक उनकी पहुंच बढ़ेगी, जिससे कर्ज की लागत में कमी आएगी।' इसलिए सरकार ने 10 बैंकों के विलय से चार मजबूत बनाने का फैसला किया है।

अर्थव्यवस्था और बैंकिंग के लिए फायदेमंद

बैंकों का विशाल होना न सिर्फ अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद है, बल्कि इससे उनके व्यावसायिक लागत में भी कमी आती है। पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली ने भी कहा था कि इससे बैंक और मजबूत होंगे और उनकी कर्ज देने की क्षमता बढ़ेगी, विलय के कारणों को बताते हुए उन्होंने कहा था कि बैंकों की कर्ज देने की स्थिति कमजोर होने से कंपनियों का निवेश प्रभावित हो रहा है। बैंकों को मजबूती मिलने से बैंक सस्ता और ज्यादा कर्ज बांट सकेंगे, बैंकों के परिचालन की लागत घटेगी, बैंकों का नए राज्यों और सुदूर क्षेत्रों में पहुंच बढ़ेगी। नई तकनीक-विशेषज्ञता आ सकेगी। बैंक कर्मियों के वेतन में असमानता दूर होगी।

एनपीए के संकट से मुकाबला

बैंकिंग सेक्टर के कुल नॉन परफॉर्मिंग एसेट्स (एनपीए) का करीब 90 प्रतिशत हिस्सा सरकारी बैंकों का है। बैकिंग सेक्टर में पिछले वित्त वर्ष में करीब 8 लाख करोड़ रुपये का एनपीए था, जो वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के अनुसार अब 7.90 लाख करोड़ रुपये रह गया है।एनपीए संकट को देखते हुए कमजोर बैंकों के विलय का मतलब यह भी है कि बैंकों की तादाद कम होगी, लेकिन वे पूंजीगत आधार पर बेहतर होंगे जिससे बैंकों की कर्ज देने की क्षमता बढ़ेगी तथा उनकी निगरानी में आसानी होगी।

बड़े बैंकों के पास ज्यादा पूंजी होती है। सरकार और नियामकों के लिए इनकी सहायता करना आसान होता है। सरकार संकट में आसानी से इनकी मदद कर सकती है और उन्हें डूबने से बचा सकती है। इसके अलावा बड़े बैंक नकदी का बेहतर प्रबंधन भी कर सकते हैं। बैंकों के विलय से उनका सम्मिलित कारोबार काफी बढ़ जाता है, इससे उनका एनपीए कुल मिलाकर संभालने लायक हो जाता है। उनके पास कम लागत के जमा और बफर कैपिटल बढ़ जाता है.

बैंक विलय के उपरांत ग्राहकों को होने वाली सुविधाएं

कमजोर बैंकों का अगर मजबूत बैंकों में विलय होता है तो ग्राहकों के लिए फायदे का सौदा होता है। मजबूत बैंक खाताधारकों के लिए लंबी अवधि में जमा पर ज्यादा आकर्षक ब्याज दे सकते हैं और कर्ज की दरें भी कम कर सकते हैं। विलय प्रक्रिया में कम से कम 4 से 6 महीने का वक्त लग सकता है, संबंधित बैंकों की शाखाओं को नया नाम मिलेगा और उनके आईएफएससी कोड भी बदल जाएंगे, हालांकि, इन बैंकों के ग्राहकों पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि यह प्रक्रिया चरणबद्ध तरीके से चलेगी। बता दें कि एसबीआई में उसके असोसिएट्स बैंकों के विलय की प्रक्रिया लंबे वक्त में पूरी हुई थी और इसके बावजूद ग्राहक सेवा प्रभावित नहीं हुई थी।

कारोबारी पर यह होगा असर, बदलनी होगी जानकारी

अगर आप कारोबारी हैं और बैंक में आपका चालू खाता (करंट अकाउंट) है तो उसमें किसी भी तरह के बदलाव की सूचना उन सभी संस्थानों को देनी होगी जिनसे आप कारोबार करते हैं। बैंकों के विलय से चालू खाता में जमा रखने की सीमा और शुल्क में बदलाव हो सकता है। इसके साथ ही बड़ी लेन-देन में इस्तेमाल होने वाले आरटीजीएस/एनईएफटी के लिए शाखा की बदली हुई जानकारी साझा करनी पड़ सकती है। वहीं, चेकबुक, पासबुक में भी नए बैंक के अनुसार बदलाव करना होगा। जब विलय प्रक्रिया पूरी हो जाएगी तो नए बैंक का एटीएम, चेकबुक, पासबुक आदि जारी किया जाएगा।

सस्ते कर्ज की संभावना

शॉर्ट टर्म में भले ही बैंकों के खाताधारकों की मौजूदा निवेश योजना या ज्यादातर कर्ज स्कीमों की दर पर कोई फर्क न पड़े, लेकिन नए और विशाल बैंक लंबी अवधि में जमा पर अच्छी ब्याज दर की पेशकश कर सकते हैं, क्योंकि नए बैंक की परिसंपत्ति ज्यादा होगी, एनपीए कम होगा और कारोबार बढ़ेगा. बैंक होम लोन, ऑटो लोन जैसी कर्ज की दरों को घटा सकते हैं।

बेरोजगारी बढ़ने की आशंका.

विलय की घोषणा होते ही अक्सर यह देखा गया है कि कर्मचारी विरोध पर उतर जाते हैं। कर्मचारी यूनियनों का कहना है कि बैंकों का एनपीए बढ़ रहा है, ऐसे में बैंकों का विलय करने से देश में बेरोजगारी बढ़ेगी। इसके पहले जब तीन बैंकों के विलय की घोषणा हुई थी तो बैंक यूनियनों ने इसका विरोध किया था। उनका दावा है कि स्टेनट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) में उसके 5 सहयोगी बैंकों के विलय से कोई चमत्कार नहीं हुआ था। उस दौरान कई शाखाओं को बंद करना पड़ा था। एनपीए बढ़ गया था और कर्मचारियों की छंटनी भी हुई थी। साथ ही स्टेट बैंक का कारोबार

भी घट गया था। 200 साल में पहली बार एसबीआई नुकसान में आ गया था।

बेहतर बैंक कर्मचारियों का नुकसान

कर्मचारी नेताओं का मानना है कि बेहतर वित्तीय हालात बड़े नेटवर्क के कारण कर्मचारियों को कई सुविधाएं मिलती हैं जो विलय के बाद बंद हो सकती हैं। बड़े पैमाने पर बैंक कर्मियों को ट्रांसफर किया जाता है और निचले स्तर के कर्मियों की नौकरी जाने का खतरा ज्यादा होता है। बैंकों के विकेंद्रीकरण से क्षेत्रीय लाभ खत्म होंगे। बड़े बैंकों में आर्थिक संकट के वक्त ज्यादा जोखिम होगा। बैंक कर्मचारियों को तकनीकी स्तर पर चुनौती बढ़ेगी।

बैंक के विलय के इन घोषणाओं के बाद भारतीय स्टेट बैंक सबसे बड़ा बैंक बन गया है बैंक विलय की इन घोषणाओं के बाद पंजाब नेशनल बैंक दूसरा सबसे बड़ा सरकारी बैंक होगा। वहीं विजया बैंक और देना बैंक के विलय के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा देश का तीसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है एवं सिंडीकेट बैंक के विलय के बाद केनरा बैंक चौथा सबसे बड़ा सरकारी बैंक बनेगा। उसके बादआंध्रा बैंक एवं कार्पोरेशन बैंक के साथ विलय के बाद पांचवा सबसे बड़ा सरकारी बैंक यूनियन बैंक होगा। इलाहाबाद बैंक के इंडियन बैंक में विलय के बाद वह सातवां सबसे बड़ा बैंक बनेगा। हालांकि बैंक ऑफ इंडिया और सेंट्रल बैंक के साथ इंडियन ओवरसीज बैंक, यूको बैंक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र तथा पंजाब एण्ड सिंध बैंक पूर्व की तरह अपना काम करते रहेंगे।

विलय की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 19 की जगह 12 सरकारी बैंक बचेंगे तथा 05 लाख करोड़ का कर्ज बांटने में सक्षम होंगे। विलय के बाद सरकारी क्षेत्र में भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, पंजाब नेशनल बैंक, केनरा बैंक, यूनियन बैंक, इंडियन बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन ओवरसीज बैंक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र और यूको बैंक रह जाएंगे। 10 सरकारी बैंकों को मिला कर चार बड़े बैंक बनाए जाएंगे।सरकार की हिस्सेदारी 51 फीसदी से कम नहीं की जाएगी,

केंद्र सरकार द्वारा 70 हजार करोड़ की पूंजी सरकारी बैंकों को दी जाएगी।

जिससे बैंकों में पूंजी का संचार होगा और उनके ऋण देने की क्षमता में बढ़ोत्तरी होगी ।

एक तरफ बैंकों में बढ़ते एनपीए के चलते सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों की स्थिति संतोषजनक नहीं है साथ ही गिरते विकास दर के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की हालत खस्ता बनी हुई है। इस स्थिति में वित्तीय रूप से छोटे एवं कमजोर बैंकों का बड़े बैंकों के साथ विलय करने के उपरांत उन बैंकों की स्थिति भी सुदृढ़ होगी जिससे बैंक नए ऋण देने में सक्षम हो सकेंगे। जिससे अर्थव्यवस्था में आ रहे रुग्णता से निकलने में मदद मिलेगी। इस दृष्टि से देखा जाए तो बैंकों का विलय दोनों स्थिति में वर्तमान परिस्थिति समीचीन बैठता है। एक तरफ इससे बैंकों की स्थिति में सुधार आएगा साथ ही अर्थव्यवस्था की स्थिति में सुधार आएगा।

अर्नाल्ड बेनेट ने कहा है कि 'कोई भी परिवर्तन, यहाँ तक की बेहतरी के लिए होने वाला परिवर्तन भी तकलीफ और असुविधाओं के साथ होता है।' इतने व्यापक स्तर पर हो रहे बैंकों के विलयकरण से कुछ लोगो तकलीफ और असुविधाएं हो सकती है परंतु किसी भी बदलाव से पहले मन में कई तरह की शंकाएँ उत्पन्न होती है। यह स्वाभाविक भी है। परंतु अच्छे के लिए हो रहे परिवर्तन को न केवल स्वीकार करना चाहिए साथ ही खुले मन से इसका इसका समर्थन भी करना चाहिए।

प्रधान कार्यालय, लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग

कविता

कल्पना

यशोदा मुर्मु

आसमान में उड़ने की
कल्पना की कल्पना थी
चंद सितारों से मिलने की
मेरी कल्पना थी

कहानी उनसे सुनने की। पूरी हुई थी
कल्पना की कल्पना
चंद सितारों से मिल के आयी थी
अधूरी रही मेरी कल्पना
मैं यहां इन्तजार मे थी।

सरिता (नदी और नारी)

सरिता ने सरिता से कहा
आप में इतनी हिम्मत कहां से आई
सदियों से निरंतर आगे बढ़ती ही गयी
कभी पीछे मुड़कर देखा ही नहीं।-2
सुनकर सरिता थोड़ा मुस्कुराई
फिर सरिता से कहा

आगे बढ़ने की तमन्ना रखती हो तो
हर मोड़ पर टक्कर
खाने की आदत डाल लो
फिर देखो अपने आपको
मंजिल पर पाओगी।-2

आँचलिक कार्यालय 2, नई दिल्ली

ग्राहक के मुख से........

मैं प्रेम सागर बहल, पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा संतपुरा, तिलक नगर, नई दिल्ली से तब से जुड़ा हूं, जब यह शाखा आरंभ ही हुई थी। मैंने सन् 1978 में दिल्ली पुलिस में कार्य ग्रहण किया और सन् 1992 में परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार में प्रतिनियुक्ति हुई। सन् 2014 में मैं उपायुक्त (परिवहन) के पद से सेवानिवृत्त हुआ। समय-समय पर अलग-अलग स्थानों पर नियुक्ति हुई लेकिन मैंने बैंक नहीं बदला। संतपुरा शाखा में पहले मेरा केवल बचत खाता ही था। संतपुरा शाखा, संतपुरा, तिलक नगर के प्रसिद्द गुरूद्वारे में है। सिक्ख बहुल इलाका होने के कारण शाखा में सदैव ही भारी भीड़ रहती है, किंतु इसके कारण कभी भी मुझे दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। मेरी नौकरी कुछ ऐसी थी कि मुझे सदैव ही समय की कमी रहती थी लेकिन मेरे बैंक से संबंधित काम कभी भी नहीं रूके। अब तो मैं रिटायर हो गया हूँ, और 15 वर्ष पूर्व मैंने अपना घर भी रोहिणी, नई दिल्ली में शिफ्ट कर लिया है। मेरी रिटायरमेंट पर मिली सारी धनराशि , एफडीआर, लॉकर आदि सभी इसी शाखा में ही हैं। मेरे कई नजदीकी रिश्तेदार अन्य सरकारी बैंकों में भी कार्यरत हैं किंतु इस बैंक, इस शाखा से कुछ ऐसा अपनापन और लगाव है कि मुझे कहीं और जाना भाता ही नहीं है और इसके लिए जिम्मेदार है यहाँ का स्टाफ, यहाँ के शाखा प्रभारी। समय समय पर यहाँ स्टाफ बदलता रहा , शाखा प्रभारी बदलते रहे, लेकिन सभी एक से बढ़कर एक रहे। आज न केवल मेरा, बल्कि मेरे घर के सभी सदस्यों, मेरी पत्नी, मेरे बच्चों के और मेरे कई नजदीकी रिश्तेदारों के बैंक खाते भी इसी शाखा में हैं। बैंक की टैग लाइन जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है, पर यहाँ का स्टाफ पूर्ण रूप से समर्पित है, उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही इनका मूलमंत्र है जिसकी वजह से जो एक बार इस शाखा से जुड़ जाता है वो कहीं और जाता ही नहीं हैं। मैं किसी एक व्यक्ति विशेष का नाम नहीं ले रहा हूँ किंतु यह भी जरूर कहना चाहूंगा इस शाखा में चाहें जन-धन खाते खुलने का समय था, चाहें नोट बंदी की विभीषिका, मूलभूत सुविधाओं का अभाव होने के बावजूद, माह का कोई भी दिन हो शाखा का समस्त स्टाफ अपना-अपना काम पूरी निष्ठा, ईमानदारी और मेहनत से करता रहा है और अपने ग्राहकों को संतुष्ट करता रहा है।

आज भी शाखा प्रभारी सुश्री निशा गोयल, अधिकारी सुश्री सतवंत कौर तथा अन्य स्टाफ सदस्य सभी अपना कार्य पूर्ण लगन और परिश्रम से कर रहे है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यह बैंक यहाँ का समस्त स्टाफ इसी प्रकार पूर्ण तत्परता से अपना कार्य करता रहे और दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे। मैं बैंक का तहे दिल से आभारी हूँ।

प्रेम सागर बहल

चलो दिलदार चलो, चाँद के पार चलो

ए. पी. जैन

राष्ट्र विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के महत्व के मद्देनजर 15 अगस्त 1969 में गठित भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन आज विश्व की विश्वसनीय व छठी सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी है। इसरो, राष्ट्र के लिए विशिष्ट उपग्रह उत्पादों व उपकरणों का विकास कर उसे राष्ट्र को ही समर्पित करता है। भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई ने इसरो को विकास की दिशा में बढ़ते रहने के लिए आवश्यक दिशा प्रदान किया। ये इसरो के गठन के प्रारंभ से वर्ष 1971 तक इसके अध्यक्ष रहे। डॉ. साराभाई का मानना था कि अंतरिक्ष के संसाधनों में मानव व समाज की समस्याओं को दूर करने का सामर्थ्य है। उनका यह वक्तव्य अंतरिक्ष कार्यक्रम के महत्व को प्रदर्शित करता है:

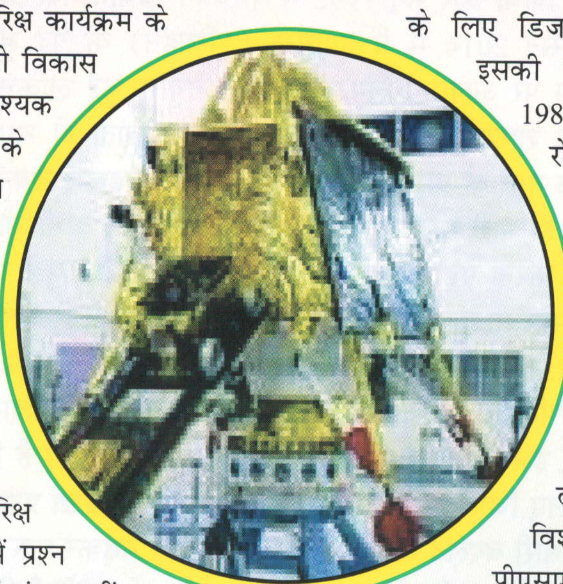

'कुछ लोग प्रगतिशील देशों में अंतरिक्ष क्रियाकलाप की प्रासंगिकता के बारे में प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। हमें अपने लक्ष्य पर कोई संशय नहीं है। हम चन्द्र और उपग्रहों के अन्वेषण के क्षेत्र में विकसित देशों से होड़ का सपना नहीं देखते किंतु राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्थपूर्ण भूमिका निभाने के लिए मानव समाज की कठिनाइयों के हल में अति-उन्नत तकनीक के प्रयोग में किसी से पीछे नहीं रहना चाहते।'

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इंडियन स्पेश रिसर्च ऑर्गनाइजेशन) ने भारत का पहला उपग्रह "आर्यभट्ट" का निर्माण अंतरिक्ष में उपग्रह संचालन का अनुभव प्राप्त करने के लिए किया था; यह उपग्रह तत्कालीन सोवियत संघ की सहायता से 19 अप्रैल 1975 को कॉसमॉस-3 एम प्रक्षेपण वाहन द्वारा प्रक्षेपित किया गया था। इस एतिहासिक उपग्रह की तस्वीर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वर्ष 1976 से 1997 के मध्य जारी दो रुपये के नोट के पृष्ठ भाग पर देखा जा सकता है। इसे इसरो की प्रथम उपलब्धि मान सकते हैं। इसरो की दूसरी प्रमुख उपलब्धि थी निम्न भू कक्षा (एलईओ) में किसी यान को स्थापित करने की क्षमता वाले प्रथम प्रमोचक राकेट एस.एल.वी.-3 का विकास। संवर्धित उपग्रह प्रमोचन यान (एएसएलवी) को निम्न पृथ्वी कक्षा मिशनों के लिए डिजाइन किया गया था। इसकी पहली सफल उड़ान 1980 में की गई। 1980 में रोहिणी प्रथम उपग्रह यान था जिसे भारत-निर्मित प्रक्षेपण यान (एसएलवी-3) की सहायता से कक्षा में स्थापित किया गया। अनुप्रयोगों में पूर्ण आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए आवश्यक था कि किफायती व विश्वसनीय लॉंच सिस्टम विकसित किया जाए, इस आवश्यकता ने आगे चलकर पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (चैस्ट) का आकार लिया। विश्वसनीय व किफायती होने के कारण पीएसएलवी शीघ्र ही विभिन्न देशों के उपग्रहों के लिए पसंदीदा वाहक बन गया। इसके बाद इसरो ने भू-तुल्य काली उपग्रह प्रमोचक राकेट (जीएसएलवी : स्वदेशी क्रायोजेनिक ऊपरी चरण से युक्त जी.एस.एल.वी. ने 2 टन भार वाली श्रेणी के संचार उपग्रहों को प्रमोचित करना सक्षम बनाया है) का विकास किया। 24 सितम्बर 2014 को मंगल ग्रह की परिक्रमा करने वाला मंगलयान भेजा जिसने सफलतापूर्वक मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश किया और भारत अपने पहले ही प्रयास में सफल होने वाला पहला राष्ट्र और मंगल तक अपना उपग्रह पहुंचाने वाला चौथा देश बन गया।

अब बात चन्द्रलोक यानी हमारे चन्द्रमिशन की। चाँद के विषय में तो आपने खूब सुना होगा, चाहे बात तारे के साथ उसे (चाँद) तोड़ लाने की हो या फिर उस लोरी की जो हमारे देश में माँ अक्सर अपने बच्चों को सुनाती है (चँदा मामा दूर के) या फिर उस चाँद के टुकड़े की उपमा की जो एक भारतीय प्रेमी अक्सर अपनी प्रेमिका के चेहरे को देता रहता है या फिर

हिंदी साहित्य में शीतलता प्रदान करने वाले के चाँद के बारे में हो। चाँद के विषय में मनमोहक कल्पना भारतवर्ष में न जाने कब से की जाती रही है, यह तो अनुमान लगाना कठिन है लेकिन 22.10.2008 को इसरो ने जैसे ही भारत के प्रथम चन्द्र मिशन चन्द्रयान -1 को सफलतापूर्वक लॉच किया वैसे ही चाँद के बारे में सभी कल्पनाएं वास्तविकता के पर लगाकर भारत को एक नए युग में लेकर चले गए।

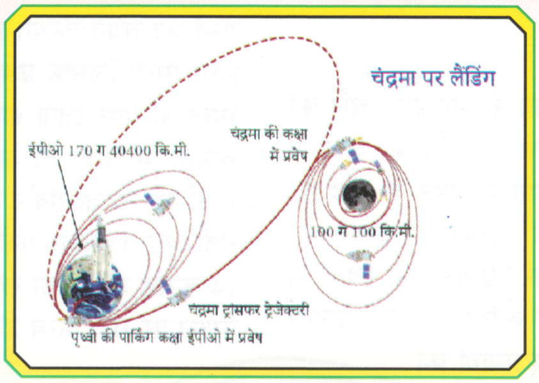

चन्द्रयान-1, चन्द्रमा की ओर कूच करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष यान था। इसे प्रमोचक पीएसएलवी सी-II के द्वारा श्री हरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से लॉन्च किया गया था। यह एक ऑर्बिटर मिशन था। इसने चन्द्रमा की 3400 से ज्यादा परिक्रमा की और कुल 312 दिन तक कार्य करता रहा। दिनांक 29.08.2009 को चन्द्रयान-1 का नियंत्रण कक्ष से संपर्क टूट गया और इसरो ने दिनांक 30.08.2009 को चन्द्रयान-1 को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया। इसने चन्द्रमा की सतह पर मैग्निशियम, एल्युमिनियम और सिलिकॉन होने का पता लगाया; चन्द्रमा का वैश्विक मानचित्र तैयार किया। चन्द्रयान-1 के साथ भारत चाँद पर यान भेजने वाला छठा देश बना। चन्द्रमा पर पानी की उपस्थिति की खोज चन्द्रयान-1 की सबसे बड़ी उपलब्धि रही।

इसके बाद बारी आई चन्द्रयान-2 मिशन की, जो चन्द्रयान -1 की ही अगली कड़ी थी। इस चन्द्रयान-2 के तीन हिस्से थे मुख्य परिक्रमा यान अर्थात आर्बिटर, लैंडर और रोवर। 2,379 किलोग्राम वजन वाला आर्बिटर सालभर चाँद का चक्कर लगाते हुए प्रयोगों को अंजाम देगा। ऑर्बिटर 100 किमी ऊंची कक्षा में स्थापित होकर चन्द्रमा की सतह के नक्शे तैयार करेगा। उसका कार्यकाल एक वर्ष का है। 1,471 किलोग्राम वजनी लैंडर का नाम भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के जनक डॉ. विक्रम साराभाई के नाम पर विक्रम रखा गया था। इसमें लगे पेलोड, पृथ्वी चन्द्रमा सिस्टम की बारीकियों को समझने की कोशिश करता। साथ ही इसके उपकरण चन्द्रमा के भूकंपों पर प्रयोग करते। इसे चाँद की एक दिन की अवधि तक काम करने के लिए तैयार किया गया था जो धरती के हिसाब से यह कुल 14 दिन की होती। वहीं रोवर का नाम प्रज्ञान था जो संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है ज्ञान। 27 किलोग्राम वाले इस छह पहियों वाले रोबोटिक वाहन रोवर को चन्द्रमा की सतह की रासायनिक संरचना का अध्ययन करने के लिए तैयार किया गया था। पूरी अवधि में चांद की सतह पर कुल 500 मीटर की दूरी तय करना इसके लिए निर्धारित था। रोवर के भार को कम करने और धरती से कम होने वाले चाँद के गुरुत्व बल से तारतम्य बैठाने के लिए उसके साथ हिलियम के गुब्बारे लगाए गए थे।

चन्द्रयान-2 अत्यंत चुनौतीपूर्ण और अपने आप में एक जटिल मिशन था क्योंकि इसमें इसरो का मुख्य उद्देश्य केवल परिक्रमा यान (आर्बिटर) को चन्द्रमा की कक्षा में स्थापित करना ही नहीं बल्कि लैंडर को बहुत धीरे-धीरे चन्द्रमा की सतह पर उतारना भी था। इस मिशन की सबसे बड़ी विशेषता लैंडर विक्रम को चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराना था। यदि भारत इसमें सफल हो जाता तो वह ऐसा करने वाला दुनिया का पहला देश होता। चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि इसकी सतह का बड़ा हिस्सा उत्तरी ध्रुव की तुलना में अधिक छाया में रहता है। इसके चारों ओर स्थायी रूप से छाया होने के कारण इस क्षेत्रों में पानी होने की संभावना है। चाँद के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के ठंडे क्रेटर्स (गड्ढों) में प्रारंभिक सौर प्रणाली के लुप्त जीवाश्म रिकॉर्ड मौजूद होने की संभावना है।

चन्द्रयान-2 की लांचिग का दायित्व इसरो के सबसे शक्तिशाली और भारी-भरकम रॉकेट जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लॉच व्हीकल-मार्क III (जीएसएलवी का अगला रूपांतर जिसमें स्वदेशी उच्च प्रणोद वाले क्रायोजेनिक इंजन हैं तथा इसमें 4 टन भार वाली श्रेणी के संचार उपग्रहों को प्रमोचित करने की क्षमता है) को दी गई थी। 640 टन वजनी इस रॉकेट की लागत 375 करोड़ रुपये है। जीएसएलवी मार्क III भारत का अब तक का सबसे शक्तिशाली लॉन्चर है और इसे पूरी तरह से देश में ही निर्मित किया गया है। इसरो ने इसे फैट बॉय (मोटा लड़का) नाम दिया था लेकिन मिडिया ने सुपरहीट फिल्म बाहुबली के नाम पर इसे बाहुबली का नाम दिया। 22 जुलाई 2019 को जीएसएलवी मार्क III ने न केवल

चन्द्रयान-2 का बोझ अपने कंधो पर ढोया वरन 135 करोड़ भारतीयों की उम्मीदों का बोझ भी इसी के कंधों पर था जिसे उसने बखूबी अंजाम दिया। 22 जुलाई 2019 को दोपहर 02:43 बजे प्रक्षेपित किए जाने के करीब 16 मिनट 23 सेकण्ड बाद चंद्रयान-2 पृथ्वी की कक्षा में 170 किलोमीटर की ऊंचाई पर जीएसएलवी मैक-3 राकेट से अलग हो गया। 24 जुलाई को पहली बार उपग्रह को पृथ्वी की अगली कक्षा में भेजा गया।

तीन हफ्ते पृथ्वी की कक्षाओं में चक्कर लगाने के बाद इसने चाँद की तरफ रूख किया। 20 अगस्त, 2019 को यान ने चाँद की कक्षा में प्रवेश किया। चाँद की अलग-अलग कक्षाओं में घूमने के बाद 02 सितंबर, 2019 को लैंडर-रोवर को यान के ऑर्बिटर से अलग कर दिया गया, लैंडर से जुड़े होने के कारण रोवर "प्रज्ञान" भी स्वत: ही अलग हो गया। ऑर्बिटर तब से ही चाँद से करीब 100 किलोमीटर ऊंचाई पर स्थित कक्षा में परिक्रमा करते हुए प्रयोगों को अंजाम दे रहा है। लैंडिंग से पहले तक की चन्द्रयान-2 की सभी गतिविधियों को सटीक तरीके से अंजाम दिया जाने के कारण ऑर्बिटर के अगले सात वर्षो तक कार्य करने की उम्मीद जतायी जा रही है जबकि लॉचिंग के समय ऑर्बिटर के काम की अवधि एक साल तय थी। वहीं 06-07 सितंबर, 2019 की मध्य रात चाँद पर लैंडिंग के अंतिम क्षणों में लैंडर से संपर्क टूट गया। रोवर प्रज्ञान भी लैंडर के अंदर ही था जिसे लैंडिंग के कुछ घंटे बाद बाहर आना था। छह-सात सितंबर की मध्य रात्रि को लैंडर विक्रम की सॉफ्ट लैंडिंग की कोशिश की गई थी। इस दौरान लैंडर से उस वक्त उसका संपर्क टूट गया था जब वह चाँद से महज 2.1 किलोमीटर की दूरी पर था। इसके बाद भी इसरो ने अपना प्रयास जारी रखा लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। 21 सितंबर, 2019 तक ही लैंडर से संपर्क की उम्मीद थी क्योंकि इसके बाद चाँद के दक्षिणी ध्रुव जहाँ लैंडर विक्रम को सॉफ्ट लैंडिंग करनी थी, पर रात हो गई और रात के दौरान यहाँ का तापमान बहुत नीचे चला जाता है; जो कई बार शून्य से 200 डिग्री नीचे तक होता है। लैंडर और उसके अंदर रखे रोवर के उपकरणों को कम तापमान पर काम करने योग्य नहीं बनाया गया था।

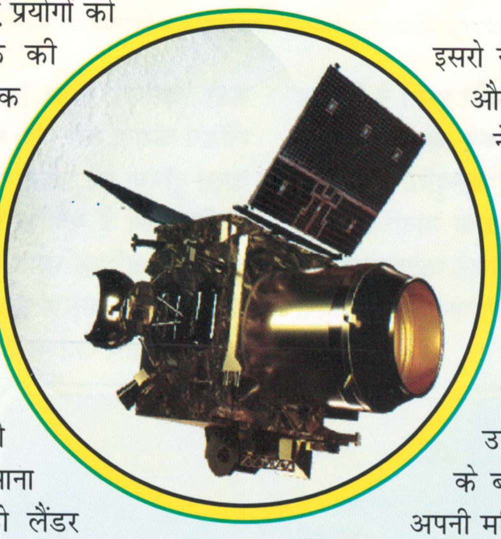

आज से ठीक 50 वर्ष पूर्व अमरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अपने अपोलो-11 अभियान के तहत 20 जुलाई, 1969 को तीन अंतरिक्ष यात्रियों को चाँद पर उतारा था जिसने मानव इतिहास में एक नया कीर्तिमान रचा। चंद्रमा तक पहुंचने में उनके अभियान को केवल चार दिन लगे थे लेकिन चन्द्रयान-2 को पृथ्वी से चन्द्रमा की सतह तक 3. 84 लाख किमी की दूरी तय करने में 48 दिन लग गए। ऐसे में भारत के चन्द्रयान-2 अभियान के तहत रोवर को उतारने में 48 दिन लगने की वजह बहुत तार्किक थी। ईधन बचाने के लिए इसरो ने घुमावदार रास्ते का चयन किया। इस रास्ते से यान को धरती के गुरुत्व बल का लाभ मिला जिसके प्रभाव से सेटेलाइट चन्द्रमा की ओर बढ़ता गया। भारत के पास इतना ताकतवर रॉकेट नहीं था जो चन्द्रयान को सीधे चन्द्रमा पर उतार दे। अमरिका के अपोलो-11 अभियान में नासा ने सैटर्न-वी नामक रॉकेट का इस्तेमाल किया था जो अब तक का सबसे बड़ा और ताकतवर रॉकेट था। भारत के चन्द्रयान-2 मिशन पर करीब 14 करोड़ डॉलर का खर्च आया है जबकि अमेरिका ने अपने अपोलो मिशन पर 100 अरब डॉलर खर्च कर दिए थे।

इसरो ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने का कठिन और महत्वकांक्षी लक्ष्य चुना था। स्पष्ट है कि भारत ने अपने लिए कठिन लक्ष्य चुना और ऐसा इसलिए ताकि नई जानकारियाँ सामने आ सके। अमेरिका के अपोलो मिशन सहित ज्यादातर मूल मिशन की लैंडिंग चन्द्रमा के मध्य में की गई थी; 1958 से 1972 तक अमेरिका के 31 मून मिशन में से 17 नाकाम रहे। चीन का मूल मिशन भी चन्द्रमा के आसान समझे जाने वाले उत्तरी ध्रुव पर केन्द्रित था। रूस ने 1958 से 1976 के बीच करीब 33 मिशन चाँद में भेजे जिसमें 26 अपनी मजिल पाने में असफल रहे। चंद्रयान-2 मिशन के अंतर्गत लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग के लिए उसकी गति को 6048 किलोमीटर प्रति घंटा से सात किलोमीटर प्रतिघंटे पर लाना भी एक बहुत बड़ी चुनौती थी। भारत का चन्द्रयान मिशन-2 इसलिए भी महत्वपूर्ण रहा क्योंकि यह विश्व का पहला अंतरिक्ष मिशन था जो चंद्रमा के दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र पर सफलतापूर्वक लैंडिंग का संचालन करता। यदि सभी कार्य पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार ही संपन्न होता तो भारत चंद्रमा की सतह पर रॉकेट उतारने वाला चौथा देश और चाँद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला पहला देश बन जाता, जहाँ अभी तक कोई देश नहीं पहुंचा है।

चन्द्रयान -2 मिशन का मुख्य लक्ष्य चाँद की उत्पत्ति और क्रमिक विकास, चाँद की जमीन में खनिज व ध्रुवीय क्षेत्र का मैप तैयार करना, बर्फ के रूप में मौजूद पानी के साक्ष्यों की पुष्टि करना, जमीन

की ऊपरी सतह और वायुमंडल का अध्ययन करना, चाँद पर भूकंपीय स्थिति का पता लगाना है। करीब दस वर्ष के वैज्ञानिक अनुसंधान के बाद भेजे गए भारत के इस दूसरे चंद्र अभियान से चंद्रमा के दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र के अब तक के अछूते भाग के बारे में जानकारी मिलती। इसका मकसद चंद्रमा के प्रति जानकारी जुटाना और ऐसी खोज करना है जिनसे भारत के साथ ही पूरी मानवता को फायदा होगा। इन परीक्षणों और अनुभवों के आधार पर ही भावी चंद्र अभियानों की तैयारी में जरूरी बड़े बदलाव लाना है ताकि आने वाले दौर के चंद्र अभियानों में अपनाई जाने वाली नई टेक्नोलॉजी तय करने में मदद मिले। चंद्रमा पृथ्वी का नजदीकी उपग्रह है जिसके माध्यम से अंतरिक्ष में खोज के प्रयास किए जा सकते हैं और इससे संबंधित आंकड़े भी एकत्र किए जा सकते हैं। चंद्रयान-2, खोज के एक नए युग को बढ़ावा देने, अंतरिक्ष के प्रति हमारी समझ बढ़ाने, प्रौद्योगिकी की प्रगति को बढ़ावा देने, वैश्विक तालमेल को आगे बढ़ाने और खोजकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों की भावी पीढ़ी को प्रेरित करने में भी सहायक होगा। वहाँ पानी होने के प्रमाण तो चंद्रयान-1 ने दे दिए थे लेकिन चन्द्रयान-2 यह पता लगाएगा कि चाँद की सतह और उपसतह के कितने भाग में, कहाँ-कहाँ और किस रूप में पानी है। चन्द्रमा के किस हिस्से में और कब रोशनी होती है, कब-कब अंधेरा छाया रहता है। आंकड़ो के विश्लेषण से इसरो को पता चल जाएगा कि आखिरी क्षणों में लैंडर के साथ क्या हुआ तो बहुत जल्द ऐसी दूसरी परियोजनाओं पर काम शुरु हो सकता है। अमेरिका द्वारा चाँद के लिए चलाए जा रहे मिशन अपोलो के समाप्त होने के बाद किसी देश ने चन्द्रमा पर मानव अभियान नहीं भेजा। अमरिका 2024 तक दक्षिणी ध्रुव पर अपना पहला मानव मिशन भेजना चाहता है इसलिए उसे चंद्रयान-2 से मिलने वाली जानकारियों का बेसब्री से इंतजार है ताकि उसके अनुसार वह अपने मिशन में आवश्यक बदलाव कर सके।

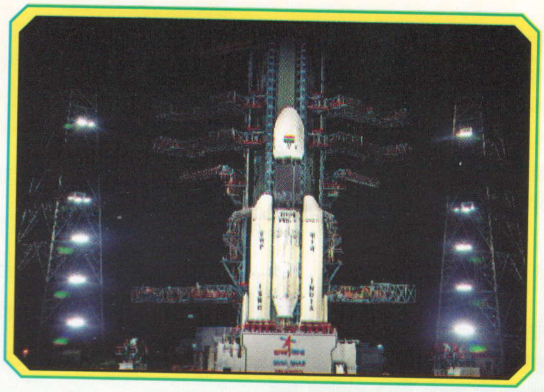

चन्द्रयान-2 के लैंडर से आखिरी क्षणों में संपर्क भले ही टूट गया लेकिन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के हौसले बुलंद है। अभियान से जुड़े 90 से 95 फीसदी लक्ष्य हासिल हो चुके हैं। चन्द्रयान -2 के तीन में से पहला और प्रमुख हिस्सा ऑर्बिटर सही-सलामत है। लैंडर को आहिस्ता-आहिस्ता चन्द्रमा की सतह पर उतार पाने में नाकामी निश्चित रूप से इसरो और देश के लिए बहुत बड़ा धक्का रहा लेकिन इससे मिशन पर बहुत ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा। चन्द्रयान-2 अपने साथ तीन उपकरणों को लेकर मिशन पर निकला था। इस मिशन पर ज्यादातर शोध कार्य ऑर्बिटर को ही करना है। लैंडर व रोवर तो केवल एक चन्द्रयान (14 दिन) ही काम करते जबकि ऑर्बिटर लंबे अंतराल तक चन्द्रमा की कक्षा में चक्कर लगाते हुए विभिन्न शोध कार्यों को अंजाम देगा। लैंडर व रोवर का शोध कार्य क्षेत्र बहुत ही सीमित था तथापि इसरो की विशेषज्ञ समिति लैंडर के साथ संपर्क टूट जाने के कारण का विश्लेषण कर रही है। रोवर, चन्द्रमा की सतह पर 500 मीटर के दायरे में ही मौजूद खनिज तत्वों के बारे में शोध करता। लैंडर विक्रम पर तीन उपकरण थे; इसे चन्द्रमा के मौसम उसके तापमान में उतार चढ़ाव और उष्मीय चालकता के बारे में पता लगाना था। सॉफ्ट लैंडिंग में विफलता पर मून मिशन पर सिर्फ पाँच फीसदी ही असर पड़ेगा। चन्द्रयान-2 मिशन 95 फीसदी सफल रहा। केवल भारत में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व ने इस मिशन के एक-एक चरण की प्रगति को पूरे ध्यान और रोमांच से देखा। देश के प्रधानमंत्री के शब्दों में "नया सवेरा होगा, कल और चमकदार रहेगा। आज से सीख लेकर हम और मजबूत व बेहतर बनेंगे। देश को हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रमों और वैज्ञानिकों पर गर्व है। अभी सर्वश्रेष्ठ आना बाकी है। देश आपके साथ है।"

चन्द्रयान-2 का सफल प्रक्षेपण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान यानी इसरो की श्रेष्ठता पर मुहर लगाने के साथ ही यह भी दिखाता है कि उसके नेतृत्व में भारत के लिए अंतरिक्ष की चुनौतियों से पार पाना अब कहीं अधिक आसान हो गया है। चन्द्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण ने एक बात तो सिद्ध कर दिया है कि 1972 में हिंदी सिनेमा जगत में आई फिल्म पाकीजा के मशहूर गीत "चलो दीलदार चलो, चाँद के पार चलो" को मूर्त रूप लेने में अब ज्यादा देर नहीं है। इस वक्त भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो अंतरिक्ष विज्ञान के मामले में अभी दुनिया का सबसे भरोसेमंद संगठन है। 50 साल के हो चुके इसरो के पास आज संचार उपग्रह और सुदूर संवेदन उपग्रहों का वृहत्तम समूह है। आज भारत न सिर्फ अपनी अंतरिक्ष आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है बल्कि दुनिया के बहुत से देशों को अपनी अंतरिक्ष क्षमता से व्यापारिक और अन्य स्तरो पर सहयोग कर रहा है। बाहुबली जीएसएलवी मार्क -3 रॉकेट के जरिए चन्द्रयान-2 मिशन के सफल प्रक्षेपण और चन्द्रमा की कक्षा में उसकी प्रविष्टि को भारत के साथ-साथ दुनिया के किफायती अंतरिक्ष कार्यक्रम के रूप में देखा जाएगा।

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

बैंक में लाभप्रदता के उपाय

बैंकिंग

किसी भी बैंकिग संस्था या व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ के बिना कोई भी संस्था अधिक समय तक नही टिक सकती। लाभ से अभिप्राय एक निश्चित समय अवधि में कुल आय तथा कुल व्यय के अन्तर को कहा जाता है। लाभप्रदता किसी भी बैंक की लार्भाजन क्षमता होती है। जो सीधा लागत से सबंधित होती है। सभी उपस्थित साधनों के उचित प्रयोग द्वारा एवं प्रभावी रणनीतियाँ बनाकर लाभप्रदता को अधिकतम किया जा सकता है।

लाभप्रदता बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार की तकनीक एवं रणनीतियाँ :-

वर्तमान में प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए बैंक में लाभप्रदता की स्थिति का बना रहना अत्यन्त आवश्यक है। लाभप्रदता को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार की योजनाएँ एवं रणनीतियाँ इस प्रकार है:-

1. बेहतर ग्राहक सेवा:

वर्तमान समय की बैंकिंग में और दो दशक पहले की बैंकिंग में काफी अधिक परिवर्तन आ गया है। वर्तमान समय में ग्राहक राजा है और ग्राहक को कोई भी सेवा प्रदान करते समय ग्राहक की इच्छा, आवश्यकता एवं उसकी संतुष्टि को ध्यान में रखता अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यह भी कहा गया है कि एक संतुष्ट ग्राहक अपने साथ कई ग्राहकों को जोड़ता है। वही एक असंतुष्ट ग्राहक अपने बैंक की छवि धूमिल करने में कोई कसर नही छोड़ता है अत: लाभप्रदता बढ़ाने में बेहतर ग्राहक सेवा का महत्वपूर्ण योगदान है।

2. आधुनिक विपणन प्रणाली :-

विपणन व्यवसायिक क्रिया-कलापों की ऐसी प्रक्रिया है जो उत्पादों एवं सेवाओं को उपभोक्ताओं तक पहुचाती है। बैंकों को अपने उत्पादों को आकर्षित एवं लोकप्रिय बनाने के लिए आधुनिक विपणन प्रणाली के तहत बैनर होर्डिंग एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया जैसे रेडियो, एसएमएस, इंटरनेट द्वारा प्रचार करना चाहिए ताकि ग्राहकों को अधिक संख्या में आकर्षित किया जा सके। आधुनिक विपणन प्रणाली के प्रयोग से भी लाभप्रदता को अधिकतम किया जा सकता है।

3. प्रौद्योगिकी का योगदान:-

आज के वर्तमान समय में बैंकिंग ने स्मार्ट बैंकिंग का रूप ले लिए है और वर्तामान समय में ग्राहक न केवल ज्यादा शिक्षित है बल्कि वह उपलब्ध सभी सेवाओं की अपेक्षा भी करता है। और ऐसा तभी सम्भव है जब नवीनतम सूचना प्रौद्यौगिकी एवं वैकल्पिक वितरण चैनलों का प्रयोग किया जाए। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिग, डेबिट/क्रेडिट स्मार्टकार्ड इलैक्ट्रानिक कैश तथा अन्य उपस्थित कई माध्यमों के प्रयोग के द्वारा भी ग्राहक सेवा में वृद्धि हुई है।

4. एन.पी.ए. का प्रबंधन:-

आज बैंकिंग क्षेत्र में सर्वाधिक चिंता का विषय है एन.पी.ए या गैर निष्पादक आस्तियों में होने वाली वृद्धि के कारण कम होती लाभप्रदता।

एन.पी.ए. को सरल शब्दों में विस्तारित किया जाए तो इसका अर्थ यह होगा कि

एन (N)	=	नहीं
पी (P)	=	प्राप्त होने वाली
ए (A)	=	आय

(नहीं प्राप्त होने वाली आय)

प्रतीक गोयल

इसके कारण भी बैंकों की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लेकिन एन.पी.ए को कानूनी एवं गैर कानूनी तरीकों का प्रयोग करके नियन्त्रित किया जा सकता है और लाभप्रदता को बढ़ाया जा सकता है।

एन.पी.ए नियंत्रण के उपाय:

विभिन्न कानूनी एवं गैर कानूनी तरीकों का प्रयोग करके एन.पी.ए को को नियंत्रित किया जा सकता है।

बीमारी के लक्षण प्रतीत होते ही उपचार:

कोई भी ऋण खाता अचानक एनपीए में परिवर्तित नहीं होता। बीमारी के लक्षण उसमें पहले दिखाई पढ़ने लगते है। कोई भी खाता एनपीए में परिवर्तित होने से पहले अनियन्त्रित खातों की सूची में आता है। ऐसे खातों में उचित कार्यवाही करके एनपीए होने से बचाया जा सकता है।

निरंतर स्मरण पत्र:-

देय तिथि से पूर्व तथा वाद में निरंतर रूप से ग्राहक को विभिन्न माध्यमों से जैसे मोबाइल, एसएमएस, ई-मेल एवं पत्र व्यवहार आदि से ऋण वसूली में प्रभावशीलता को प्राप्त किया जा सकता है।

* ग्राहक को शिक्षित करके भी एनपीए को कम किया जा सकता है
* विभिन्न प्रकार के कानूनी तरीकों का प्रयोग करके जैसे-
  - लोक अदालत।
  - सरफेसी एक्ट 2002।
  - डेट रिकवरी ट्रिब्यूनल (डी.आर.टी)।
* ऋण वसूली कैंप का आयोजन करके।

उपरोक्त लिखित विभिन्न उपायों एवं तरीकों का प्रयोग करके काफी हद तक एनपीए को नियंत्रित किया जा सकता है और बैंक की लाभप्रदता को अधिकतम किया जा सकता है।

5. बैंकिंग उत्पादों की क्रास सेलिंग:-

क्रास सेलिंग से अभिप्राय मुख्यत: विभिन्न प्रकार के उत्पादों की एक स्थान पर उपलब्धता से है। बैंकों के द्वारा बीमा उत्पाद, शेयर मार्किट डीलिंग, बैंकिंग उत्पाद व अन्य कई प्रकार की सेवाएँ भी प्रदान की जाती है।

क्रास सेलिंग के तहत एक उचित रणनीति का निर्धारण करके भी बैंकों की लाभप्रदता को अधिकतम किया जा सकता है।

अन्त में :-

संक्षेप में यह कहा जाए तो गलत नही होगा कि बैंकिंग केवल बैंकिंग न रहकर ही स्मार्ट बैंकिंग में परिवर्तित हो चुकी है। और इस प्रतिस्पर्धी वातावरण में बैंक को बाजार के रूख को पहचानकर एवम् ग्राहकों की इच्छा और आवश्यकताओं के अनुरूप ही उत्पाद उपलब्ध करवाने होगें। विभिन्न वैकल्पिक चैनलों एवम् आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके और कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके सफलता को अधिकतम किया जा सकता है।

आँचलिक कार्यालय, गुरूग्राम

"प्रत्येक प्राणी के जीवन में ऐसा एक अवसर आता है, जब भाग्य उसे कुछ करने या कुछ बनने का मौका देता है और वही मौका उसके भविष्य का निर्णय भी कर देता है।" .... प्रेमचंद

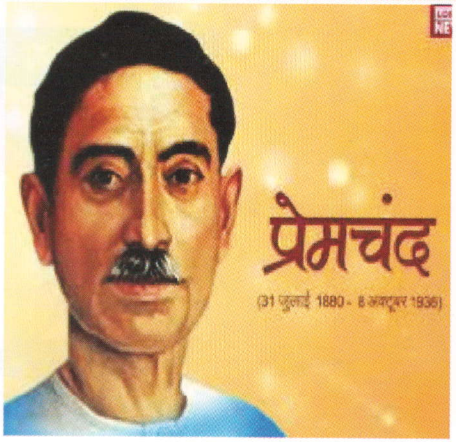

कार्टून कोना

पूजा त्रिपाठी,
शाखा जूहू, मुम्बई

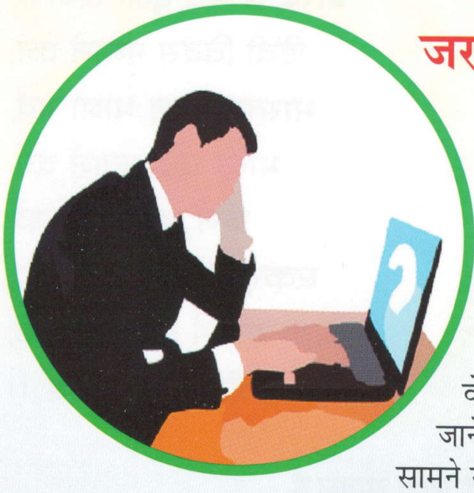

जरा सोचिए.........?

श्री रत्नेश्वर चौधरी

दिल्ली मेट्रो में कार्यालय जाने के समय भीड़ अपने चरम पर थी। जरूरतों के मुताबिक मेट्रो प्रबंधन ने मेट्रो की कुछ सीटें वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षित की है जिससे उन्हें यात्रा के दौरान तकलीफ न हो क्योंकि उम्र के इस पड़ाव में वे अन्य लोगों की शारीरिक पुष्टता की तुलना में थोड़े कमजोर होते हैं। मैं भी राजेन्द्र प्लेस जाने के लिए मेट्रो पर सवार हुआ; संयोगवश मुझे वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षित सीटों के सामने खड़े होने के लिए थोड़ी जगह मिल गई। सामने दो आरक्षित सीटों पर एक वरिष्ठ नागरिक तथा एक युवा महिला अपने लगभग एक वर्ष के बच्चे को गोद में लिए हुए बैठी थी। मेट्रो के अगले स्टेशन पर कुछ यात्री चढ़े जिनमें से एक वरिष्ठ नागरिक उस आरक्षित सीट के पास आए और गोद में बच्चे लिए हुए उस युवा महिला को उठने को कहा कि यह सीट वरिष्ठ नागरिकों के लिए है इसलिए यहाँ मुझे बैठना है।

महिला उस आरक्षित सीट से उठती इससे पहले ही बगल में बैठे हुए दूसरे वरिष्ठ नागरिक ने अपनी सीट खाली कर दी और सीट मांग रहे वरिष्ठ नागरिक से स्नेहपूर्वक कहा "महिला अपने बच्चे को गोद में लिए हुए बैठी हुई है इसलिए उसे बैठे रहने दें और आप चूंकि मुझसे अधिक वरिष्ठ लग रहे हैं इसलिए मेरी सीट पर बैठ जाएं।"

दोनों ही वरिष्ठ नागरिक थे, अंतर केवल इतना था कि एक वरिष्ठ नागरिक अपने से अधिक जरूरतमंद के लिए अपनी सीट छोड़कर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह कर रहा था और एक सामाजिक दायित्व को ताक में रखकर अपने अधिकार की मांग। प्रशासन ने लोगों की जरूरतों के अनुसार उन्हें विशेष सुविधाएं देकर अपना काम बखूबी किया है लेकिन लोगों की जवाबदेही बनती है कि प्रशासन द्वारा दी जा रही सुविधाओं का विवेकपूर्ण उपभोग करें और अपने से अधिक जरूरतमंद लोगों की यात्रा सुगम बनाएं। मैंने तो सोच लिया है कि मेट्रो या किसी भी स्थान पर यात्रा करते समय अपने से अधिक जरूरतमंद व्यक्तियों चाहे वे वरिष्ठ नागरिक हों या न हो, को अपनी सीट अवश्य दूंगा; आगे आपकी बारी है। जरा सोचिए......??

शाखा के. के. रोड रायपुर (छत्तीसगढ़)

आओ हिंदी दिवस मनाएं

वर्षा पटेल

बिना हिंदी के आग्रह के,
नहीं मिलता कोई प्रतिसाद,
हिंद देश की माटी में,
यह बात है निर्विवाद।
हिंदी को विश्व पटल पर पहुंचाएं,
आओ हिंदी दिवस मनाएं ।।

हिंदी को प्रतिष्ठित किया है हमने,
संविधान के पन्नों पर,
गौरव से भरा हुआ क्षण है,
हिंदी दिवस मनाने का,
भारतवर्ष का भाषा पर्व,
भाषा प्रेम जताने का,
बिन भाषा-प्रेम के,
एकसूत्र में बंधना दुर्जेय,
एक सूत्र में हम बंध जाएं,
आओ हिंदी दिवस मनाएं ।।

हिंदी देश की प्रतिनिधि,
क्षेत्रीय भाषा सहोदरा हैं इनकी,
इनसें ही ये फली-फूली है,
और इनकी अग्रज भी हिंदी।
बोली, उपभाषाओं की नदियाँ,
आकर मिलती है हिंदी के गागर में,
बूंदों से सागर छलकाएं,
आओ हिंदी दिवस मनाएं ।।

एक राष्ट्र, एक रुप, एक सृजन है,
नवांकुर में विविध छटा भी बिखरे हुए हैं,
लोक-भाषा के अनुराग में,
लोकरंग बहुरंगी कहीं पर,
और कहीं वाचिक सौंदर्य सूत्र हमारी एकता की,
छिपी हुई है विविधताओं में,
भारतवर्ष की विविधता दिखाएं,
आओ हिंदी दिवस मनाएं।।

देश प्रेम की संवाहिका रही है,
स्वतंत्रता के जनांदोलन में,
कहीं हरिश्चन्द्र, कहीं निराला और प्रसाद के मंथन में,
सुकुमार के प्रकृति की हिंदी,
अंगड़ाती-बलखाती हिंदी,
साहित्य की साधना समझाएं,
आओ हिंदी दिवस मनाएं ।।

आँचलिक कार्यालय भोपाल

बारिश की बूँदे

एडविन हांसदा

बारिश की बूंदें पड़ती है जब धरती पर
एक सौंधी सी खुशबू आती है मिटटी से
महक उठता है इसकी खुशबू से सारा वातावरण

बारिश की बूंदें पड़ती है जब धरती पर
खुशी की लहर दौड़ पड़ती है पेड़ पौधें पर
जैसे मिला हो नया जीवन, खिल उठता है सारा पर्यावरण

बारिश की बूंदें पड़ती है जब धरती पर
अपनी ही धुन में नृत्य करता है मयूर वन में
जैसे नृत्य करती है मीरा कृष्ण की भक्ति धुन में

बचा कर रखना ऐ मनुष्य इन बूंदों को
न कर यूं बर्बाद इन बूंदों को
वरना पड़ जाएगा अकाल इस धरती पर

रह जाएंगे प्यासे ये पेड़ और पौधे,
ये जीव और जंतु, रह जाएगी प्यासी ये धरती
मर जाओगे प्यासे ऐ मनुष्य तुम भी

बारिश की बूंदें पड़ती है जब धरती पर
सहेज कर रखना इन बूंदों को
जैसा हो कोई मूल्यवान मोती

प्रधान कार्यालय, लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग

बच्चों की बात

कैप्टन प्रकाशचंद्र

परिंदो की मानिंद,
फुर से उड़ गए बच्चे,
और उड़ गया उनका साथ,
उनका अहसास–हमसे जुड़ने का...
उड़ गई गुनगुनाती,
मगर होले से समाज आती,
उनके बचपन की बातें,
बेजुबानी बेतुकी, तुतलाती रातें,
वो बिस्तर पर अठखेलियाँ,
उड़ गई–आखँ मिचौलियाँ,
नन्ही नन्ही शरारतें, मीठी मीठी बातें,
उड़ चली, चेहरे की मासूमियत,
अधखुली आँखों की लुका छिपी,
सब उड़ गया हाथों से, धूल की तरह खुली मुखा स्त्री,
और उड़ गया मेरे बच्चों का बचपन।

आखों बार बार ताकती है नभ मे,
बच्चों की उन्मुक्त उड़ाने,
अपनी बेबसी और उनकी मस्त हसी,
सब खुसियाँ फुर से उड़ गई,
नए परों के साथ,
नए परिंदों के साथ ,
हम तुम रह गए है अब,
आओ करते हैं बच्चों सी बात।

प्रधान कार्यालय, जनसंपर्क विभाग

आपकी कलम से ....

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' का अप्रैल-जून 2019 का अंक हमें प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण क लिए बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद।

इस पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक तथा रोचक है। पत्रिका में प्रकाशित सदस्य कार्यालयों क विभिन्न गतिविधियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

''पर्यावरण बचाओ, जीवन बचाओ'' जैसे लेख के माध्यम से पर्यावरण की महत्ता को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। ''अनबूझ पहेली'', ''माँ'' एवं अन्य कविताएं बहुत ही भावनात्मक हैं। ''लम्बी सीटी देकर जब गाड़ी खुलने वाली थी'', ''राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर'' जैसे लेख साहित्यकारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। ''नकदी रहित अर्थव्यवस्था उवं भारतीय अर्थव्यवस्था'' जैसे लेख बैंकिंग में नकदी रहित अर्थव्यवस्था के नुकसान बखूबी ब्यान करते है।

सुचरिता द्विवेदी
महाप्रबंधक, राजभाषा
पंजाब नेशनल बैंक

हाल ही में मुझे आपकी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का मार्च 2019 का अंक पढ़ने को मिला। मैनें पाया कि उक्त पत्रिका में बैंक की जानकारी के साथ सभी विषयों का समावेश किया गया है, जो इस पत्रिका की विशेषता है

देशबन्धु गुप्ता
पुर्व-प्रबंधक, युनियन बैंक ऑफ इंडिया

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया रचना के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर, पेन नं. तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) भी अवश्य लिखें ।

मुख्य संपादक

राजभाषा समाचार

बैक के प्रधान कार्यालय का राजभाषा कार्यान्वयन सम्बंधी निरीक्षण दिनांक 07/10/2019 को श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री शैलेश कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्तीय सेवाएं विभाग, वित मंत्रालय भारत सरकार द्वारा किया गया।

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए श्री नरेन्द्र सिंह व श्री शैलेश कुमार सिंह साथ हैं राजभाषा विभाग के प्रभारी श्री राजीव कुमार राय।

निरीक्षणकर्ताओं के साथ प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग का समस्त स्टाफ।

प्रधाान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रधान कार्यालय में आपसी संवाद सार्थक दिशा के अंतर्गत विशेष संगोष्ठी का अयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में स्टाफ ने सहभागिता की।

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

लाभ का पर्व
पीएसबी उत्सव माला
के संग

पीएसबी अपना घर

मकान/फ्लैट/प्लॉट के निर्माण, क्रय और नवनीकरण करने हेतू आवश्यकता आधारित ऋण

आकर्षक ब्याज दर @ 8.30%*

40 वर्षों तक की सबसे लम्बी कर्ज अदायगी की अवधि

शून्य प्रोसेसिंग एवं निरीक्षण शुल्क*

पीएसबी अपना वाहन

ऑन-रोड मूल्य पर 100% तक ऋण*

आकर्षक ब्याज दर @ 8.50%*

7 वर्षों तक की पुनर्भुगतान अवधि

शून्य प्रोसेसिंग एवं निरीक्षण शुल्क

पीएसबी व्यापार ऋण

10 करोड़ तक का ऋण (सावधि ऋण और ओवर ड्राफ्ट)

आकर्षक ब्याज दर

एमएसएमई इकाईयों के लिए विशेष छूट

बेहद आसान ऋण स्वीकृति

10 वर्षों तक सावधि ऋण की पुनर्भुगतान अवधि

50% प्रोसेसिंग शुल्क में छूट टीएल/डब्ल्यूसीटीएल/ओवर ड्राफ्ट*

* नियम एवं शर्तें लागू * ब्याज दर-रेपो रेट से जुड़ा

अधिक जानकारी के लिए हमारी नजदीकी शाखा से सम्पर्क करें। 1800 419 8300 (ऑल इंडिया टोल फ्री) पर डायल करें एवं www.psbindia.com पर जाएं

फोन या ई-मेल के माध्यम से अपने इंटरनेट बैंकिंग के ब्यौरे, जैसे यूजर आईडी / पासवर्ड या अपने क्रेडिट / डेबिट कार्ड के नंबर / सीवीवी / ओटीपी किसी को न बताएं।